स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

मार्गशीर्ष वि. स. २०७४ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०४ • अंक : ११ • नवम्बर २०१७

'गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 105वाँ वार्षिक महोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न'

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल के 105वें वार्षिक महोत्सव का ध्वजारोहण कर शुभारम्भ करते हुए एसपी अभिषेक गर्ग व गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी

गुरुकुल के 105वें वार्षिक महोत्सव की चित्रावली

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत (महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: समरपाल आर्य
: अशोक कुमार

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

- संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : प्राकृतिक कृषि ही एकमात्र विकल्प	02
2.	घातक है बच्चों की प्रताड़ना	03
3.	गृहस्थ आश्रम और महर्षि दयानन्द सरस्वती	04
4.	वैदिक धर्म की विशेषताएँ	06
5.	बलिवैश्वदेव यज्ञ की अनिवार्यता व स्वरूप	08
6.	कविता : छेड़छाड़	09
7.	Superstition : The Blind Faith	10
8.	जीवन में संस्कारों का महत्त्व	11
9.	कविता : कन्याएँ कितनी महिमामयी	12
10.	मानव जीवन हेतु पेड़-पौधों का महत्त्व	13
11.	चाणक्य के कुछ अमर वाक्य	14
12.	खजूर और अंगूर, कितने पास कितने दूर	15
13.	राम और आर्यसमाज	17
14.	क्यों कहते हैं गाय को माता	18
15.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	19
16.	वास्तविक जीवन की खोज	20
17.	गुरुकुल समाचार	21
18.	गुरुकुल समाचार	22
19.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

निडर और धैर्यवान् व्यक्ति सदा गौरव के पात्र होते हैं।

8168436754

संपादकीय

प्राकृतिक कृषि ही एकमात्र विकल्प

वर्तमान समय में भागदौड़ भरी अति व्यस्त दिनचर्या और विषैले खाद्य पदार्थों के सेवन के चलते लोग विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त हैं। पुराने समय में व्यक्ति 100 या इससे भी अधिक काल तक जीवित रहते थे, इसके पीछे उनके खानपान का विशेष महत्त्व था। पुरानी कहावत भी है-'**सादा खाणा, सादा बाणा**' अर्थात् साधारण भोजन और साधारण वेशभूषा। परन्तु आज न तो हमारी वेशभूषा ही सादी है और न ही हमारा भोजन। खानपान की सभी वस्तुएं जहरीली हो गई हैं, आश्चर्य की बात यह है कि हमारे खाद्य पदार्थों में विष घोलने वाला कोई और नहीं अपितु हम स्वयं ही हैं और इसके दुष्परिणाम भी हम नये-नये रोगों के रूप में भुगत रहे हैं। विषरहित भोज्य पदार्थों और भयंकर रोगों से बचाव का एकमात्र विकल्प है - '**जीरो बजट प्राकृतिक कृषि**'।

हाल में ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल **आचार्य देवव्रत जी** की गरिमामयी उपस्थिति में हरियाणा के कृषि, सिंचाई, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ जी द्वारा '**शून्य लागत प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र**' का शिलान्यास किया गया। निश्चित रूप से देश व प्रदेश के किसानों के लिए यह प्रशिक्षण केन्द्र मील का पत्थर सिद्ध होगा क्योंकि रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के चलते किसानों की दशा दयनीय हो चुकी है। फसलों से अधिक लाभ लेने के लालच में फसलों में रासायनिक खाद व कीटनाशकों का अधिकाधिक छिड़काव कर किसान न केवल आर्थिक तौर पर कमजोर होता है बल्कि इन रासायनिक खाद व कीटनाशकों से तैयार अन्न, फल व सब्जियों के सेवन से लोग बीमार पड़ते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आज हम भोजन के रूप में धीमा जहर खा रहे हैं, जो हमें धीरे-धीरे मृत्यु तक पहुँचा देता है। यही नहीं फसलों के अवशेष मिटाने के लिए किसान खेतों में आग लगा देते हैं इससे न केवल खेत में उपस्थित जीव-जन्तु मारे जाते हैं अपितु भूमि की उर्वरा शक्ति भी प्रभावित होती है वहीं इस आग के कारण वायुमंडल में धुआँ फैल जाता है जो वायु को दूषित करने के साथ-साथ कई तरह के रोगों का कारण बनता है। ऐसे में रासायनिक खाद से की जाने वाली खेती हमेशा हानिकारक है, इससे बचने के लिए हमें 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' को अपनाना होगा।

गुरुकुल में स्थापित 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र' में किसानों को प्राकृतिक कृषि के विभिन्न विषयों की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। साथ ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा 180 एकड़ में स्थित प्राकृतिक कृषि क्षेत्र का भ्रमण करवाकर किसानों को प्राकृतिक कृषि के उत्पादन और फसलों की गुणवत्ता को दिखाएंगे। प्राकृतिक कृषि से न केवल किसान आर्थिक रूप से समृद्ध होगा बल्कि इससे देशी गाय की दशा में भी सुधार होगा क्योंकि प्राकृतिक कृषि में खाद की अपेक्षा देशी गाय के गोमूत्र और गोबर का प्रयोग किया जाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस पद्धति से खेती करने के लिए किसान को बाजार से कुछ भी लाने की आवश्यकता नहीं पड़ती केवल घर में उपयोग होने वाली वस्तुओं से ही खाद और कीटनाशक तैयार कर खेत में डाले जाते हैं और जो गाय दूध देने लायक नहीं होती, उनका गोबर और गोमूत्र प्राकृतिक कृषि के लिए अधिक लाभकारी होता है।

गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत का उद्देश्य है कि देश व प्रदेश के किसानों को अपनी पारम्परिक प्राकृतिक कृषि के लिए प्रेरित कर जहरीले होते खाद्य पदार्थों और बंजर होती धरती माता को बचाया जाए। देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंट कर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' आदर्श के बारे में बताया तब उन्होंने केन्द्रीय कृषि मंत्री गिरिराज सिंह सहित अन्य सांसदों के प्रतिनिधि मंडल व कृषि वैज्ञानिकों को गुरुकुल का भ्रमण करने हेतु भेजा। गुरुकुल के कृषि क्षेत्र को देखकर केन्द्रीय मंत्री सहित सभी कृषि वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये और गुरुकुल के कृषि क्षेत्र की अत्यधिक प्रशंसा की। यही कारण है कि गुरुकुल में 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र' की स्थापना की जा रही है। किसान भाइयों से मेरा अनुरोध है कि एक बार गुरुकुल के 'प्राकृतिक-कृषि क्षेत्र' का भ्रमण अवश्य करें और देशहित में विषयुक्त खेती को छोड़कर '**जीरो बजट प्राकृतिक कृषि**' करने का संकल्प लें।

- कुलवंत सिंह सैनी

धैर्यवान व्यक्ति मृत्यु को विपत्ति नहीं, कृपा मानता है।

घातक है बच्चों की प्रताड़ना

शमशेर सिंह

पहले की अपेक्षा आजकल बच्चों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। कई बार तो अधिक लाड़-प्यार से बच्चे उद्दण्ड भी हो जाते हैं, किन्तु कभी-कभी माता-पिता बच्चों से अपनी बात बनवाने के लिए कठोर व्यवहार भी करते हैं। कई अभिभावक अपने बच्चों को रस्सी से बांधना, धूप में खड़े करना या किसी अंधेरे कमरे में बंद कर देने जैसा शर्मनाक कार्य करने से भी नहीं चूकते। बात-बात पर चपत लगाना एवं प्रताड़ित करना तो कई अभिभावकों की रोजमर्रा की दिनचर्या में शामिल है। बाल चिकित्सा शास्त्री श्री लेफर के अनुसार 'सभी माता-पिता किसी न किसी मामले में अपने बच्चों पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश करते हैं।' श्री लेफर का कहना है कि सीख और उदाहरण द्वारा प्रभुत्व जमाने में अन्तर है। डांटने वाले अभिभावक अपने बच्चों को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए उन्हें आतंकित करने का रास्ता अपनाते हैं, जिसे किसी भी मायने में सही नहीं कहा जा सकता।

बच्चों पर अत्याचार का सिलसिला घर तक ही सीमित नहीं है। स्कूलों में शिक्षकों द्वारा भी यातनाएं दी जाती हैं जैसे लकड़ी की छड़ी से बच्चों को पीटना, मुर्गा बनाना आदि। आश्चर्य की बात यह है कि अभिभावक शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले दण्ड पर तो रोष प्रकट करते हैं लेकिन स्वयं द्वारा किये जाने वाले बच्चों के प्रति क्रूर व्यवहार को प्यार का ही एक रूप मानते हैं।

प्रताड़ना बच्चों को शारीरिक रूप से कमजोर करने के साथ-साथ मानसिक रूप से भी रोगी बना देती है। ऐसे बच्चे संस्कारविहीन होकर सामाजिक समस्या बन जाते हैं। ऐसे बच्चे धीरे-धीरे समाज व परिवार दोनों से दूर हो जाते हैं जो न तो बच्चों के हित में है और न ही देश, समाज एवं परिवार के लिए उपयुक्त है।

मनावैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि डांटने, धमकाने का बच्चों के कोमल मन पर गहरा असर पड़ता है। माता-पिता का यह कहना गलत है कि बच्चे छोटे होते हैं इसलिए वे कोई बात सोच-समझ या महसूस नहीं कर पाते हैं। परीक्षण करने पर यह पाया गया है कि डांट-फटकार खाने वाले बच्चे इसके आदी हो जाते हैं और फिर एक सीमा के बाद उन पर डांट-फटकार का भी असर नहीं होता। जिन बच्चों की भावनाओं को ठेस पहुंचती है, बड़े होने पर उनका मानसिक विकास दूसरे बच्चों की अपेक्षा कम होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि भावनाओं को ठेस पहुंचते रहने से बच्चों के स्वाभिमान का लगातार ह्रास होता रहता है।

तथ्यों एवं विचारों से स्पष्ट है कि प्रताड़ना बच्चों के विकास को अवरुद्ध करती है। अभिभावक एवं अध्यापक यदि बच्चों का सही मायने में भला चाहते हैं तो उन्हें अपनी इस संकीर्ण सोच में परिवर्तन लाना होगा। - **शमशेर सिंह,** सह-प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

भोजन सम्बंधित कुछ आवश्यक नियम

आयुर्वेद में आहार और भोजन के सम्बंध में कई नियम बताए गये हैं। इन नियमों का पालन करने पर बीमारियों से तो बचाव होता ही है, स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहता है और दीर्घायु प्राप्त होती है। इन नियमों में भोजन के समय से लेकर मात्रा और भोजन के प्रकार के बारे में विस्तार से बताया गया है। जानिए ऐसे ही कुछ नियमों के बारे में :-

1. सुबह का नाश्ता अच्छा और पौष्टिक लें। दोपहर का भोजन प्रात:राश से 30 प्रतिशत कम और रात का भोजन दोपहर के भोजन से भी 30 प्रतिशत कम लेना चाहिए।
2. विपरीत गुण वाले खाद्य पदार्थों को एक साथ न खाएं, जैसे दूध के साथ दही, इससे आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है।
3. भोजन हमेशा बैठकर, पालथी मारकर खायें। खड़े होकर या चलते-चलते खाने से कई तरह के रोग हो सकते हैं।
4. बिना भूख लगे कभी भोजन न करें, इससे भोजन नहीं पच पाता और आपको गैस, बदहजमी जैसी परेशानी हो सकती है।
5. पहले खाया हुआ पचने के बाद ही दूसरी बार भोजन करें। खाने के बीच 4-5 घंटे का अन्तर होना चाहिए।
6. जल्दी-जल्दी भोजन न करें। अच्छी तरह चबाकर भोजन करें। इससे लार अच्छी बनती है और भोजन जल्दी पचता है।
7. भोजन करते समय हँसना, बात करना नुकसानदायक हो सकता है। भोजन गले में या सांस की नली में फंस सकता है, अत: हमेशा शांत चित्त होकर भोजन करें।
8. भूख से थोड़ा कम ही खायें, पेट में 20 प्रतिशत जगह खाली रखें।
9. भोजन करते समय नकारात्मक भाव न रखें, शान्त और प्रसन्न मन से भोजन करें।
10. हमेशा गर्म और ताजा भोजन ही करें, ताजा भोजन शीघ्र पचता है।
11. भोजन में ठोस और तरल का अनुपात 70 और 30 का होना उत्तम माना जाता है।
12. दोपहर के भोजन के बाद 20 मिनट तक आराम करें और रात के भोजन के बाद 15 मिनट तक टहलना चाहिए।

उद्यमी धैर्यवान कार्य पूर्ण किये बिना नहीं लौटते हैं।

गृहस्थ धर्म और महर्षि दयानन्द सरस्वती

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। **'गुरुकुल-दर्शन'** के पाठकों हेतु आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित **'गृहस्थ धर्म'** में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस शृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

लेखक परिचय : आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया, साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

गृहाश्रम संस्कार : गृहाश्रम संस्कार उसे कहते हैं कि जो ऐहिक और पारलौकिक सुखप्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना और नियत काल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना। सत्य धर्म ही में अपना तन, मन, धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति करनी, इसी का नाम गृहाश्रम संस्कार है।

वधू पूजा : अपने घर आके पति, सास, श्वसुर, ननद, देवर, देवरानी, ज्येष्ठ, जेठानी आदि कुटुम्ब के मनुष्य वधू की पूजा अर्थात् सत्कार करें, सदा प्रीतिपूर्वक परस्पर वर्ते और मधुर वाणी, वस्त्र, आभूषण आदि से सदा प्रसन्न और सन्तुष्ट वधू को रखे तथा वधू भी सबको प्रसन्न रखे। वर उस वधू के साथ पत्नीव्रतादि सद्धर्म से वर्ते तथा पत्नी भी पति के साथ पतिव्रतादि सद्धर्म चाल-चलन से सदा पति की आज्ञा में तत्पर और उत्सुक रहे और वर भी स्त्री की सेवा, प्रसन्नता में तत्पर रहे।

वेद में गृहस्थ धर्म

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।

(अथर्व. का. 3, सू. 30, मं. 1)

हे गृहस्थों! मैं ईश्वर तुमको जैसी आज्ञा देता हूँ वैसी ही (वर्तमान) करो, जिससे तुमको अक्षय सुख हो अर्थात् (वः) तुम्हारा (सहृदयम्) जैसी अपने लिए सुख की इच्छा करते और दुःख नहीं चाहते हो वैसे माता-पिता सन्तान स्त्री-पुरुष भृत्य, मित्र पड़ोसी और अन्य सबसे समान हृदय रहो। (सांमनस्यम्) मन से सम्यक् प्रसन्नता और (अविद्वेषम्) वैर विरोधादि रहित व्यवहार को तुम्हारे लिए (कृणोमि) स्थिर करता हूँ, तुम (अघ्न्या) हनन न करने योग्य गाय (वत्सं जातमिव) उत्पन्न हुए बछड़े पर वात्सल्यभाव से जैसे वर्तती है वैसे (अन्यो अन्यम्) एक दूसरे से (अभि हर्यत) प्रेमपूर्वक कामना से वर्ता करो।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।

(अथर्व. का. 3, सू. 30, म. 2,3)

हे गृहस्थों! जैसे तुम्हारा (पुत्रः) पुत्र (मात्रा) माता के साथ (सं मनाः) प्रीतिपूर्वक मनवाला, (अनुव्रतः) अनुकूल आचरणयुक्त, (पितुः) और पिता के सम्बन्ध में भी इस प्रकार का प्रेमवाला (भवतु) होवे, वैसे तुम भी पुत्रों के साथ सदा वर्ता करो। जैसे (जाया) स्त्री (पत्ये) पति की प्रसन्नता के लिए (मधुमतीम्) माधुर्य गुणयुक्त (वाचम्) वाणी को (वदतु) कहे वैसे पति भी (शन्तिवाम्) शान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाषण किया

करे।

हे गृहस्थों! तुम्हारे में (भ्राता) भाई (भ्रातरम्) भाई के साथ (मा द्विक्षत्) द्वेष कभी न करे, (उत) और (स्वसा) बहन (स्वसारम्) बहन से द्वेष कभी (मा) न करे तथा बहन भाई भी परस्पर द्वेष मत करो किन्तु (सम्यंचः) सम्यक् प्रेमादि गुणों से युक्त (सव्रताः) समान गुणकर्म स्वभाव वाले (भूत्वा) होकर (भद्रया) मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ (वाचम्) सुखदायक वाणी को (वदत) बोला करो।

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृणमो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।।

(अथर्व. का. 3, सू. 30, म. 4)

हे गृहस्थों! मैं ईश्वर (येन) जिस प्रकार के व्यवहार से (देवाः) विद्वान् लोग (मिथः) परस्पर (न वियन्ति) पृथक् भाव वाले नहीं होते, (च) और (नो विद्विषते) परस्पर में द्वेष कभी नहीं करते, (तत्) वही कर्म (वः) तुम्हारे (गृहे) घर में (कृण्मः) निश्चित करता हूँ (पुरुषेभ्यः) पुरुषों को (संज्ञानम्) अच्छे प्रकार चिताता हूँ कि तुम लोग परस्पर प्रीति से वर्तकर बड़े (ब्रह्म) धनैश्वर्य को प्राप्त होओ।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तःसुधुराश्चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः
संमनसस्कृणोमि।।

(अथर्व. का. 3, सू. 30, म. 5)

हे गृहस्थादि मनुष्यों! तुम (ज्यायस्वन्तः) उत्तम विद्यादियुक्त (चित्तिनः) विद्वान् सज्ञान (सुधुराः) धुरन्धर होकर (चरन्तः) विचरते और (संराधयन्तः) परस्पर मिल के धन धान्य राज्य समृद्धि को प्राप्त होते हुए (मा वियौष्ट) विरोधी वा पृथक्-पृथक् भाव मत करो। (अन्यः) एक (अन्यस्मै) दूसरे के लिए (वल्गु) सत्य मधुर भाषण (वदन्तः) कहते हुए एक दूसरे को (एत) प्राप्त होओ इसीलिए (सध्रीचीनान्) समान लाभाऽलाभ से एक दूसरे के सहायक, (संमनसः) एकमतवाले (वः) तुमको (कृणोमि) करता हूँ अर्थात् मैं ईश्वर तुमको जो आज्ञा देता हूँ, इसको आलस्य छोड़कर किया करो।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।
सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।
देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु।।

(अथर्व. का. 3, सू. 30, म. 6,7)

हे गृहस्थादि मनुष्यों! मुझ ईश्वर की आज्ञा से तुम्हारा (प्रपा) जलपान स्नानादि का स्थान आदि व्यवहार (समानी) एकसा हो, (वः) तुम्हारा (अन्नभागः) खानपान (सह) साथ हुआ करे, (वः) तुम्हारे (समाने) एक से (योक्त्रे) अश्वादि यान के जोते (सह) संगी हों और तुमको मैं धर्मादि व्यवहार में भी एकीभूत करके (युनज्मि) नियुक्त करता हूँ जैसे (अराः) चक्र के आरे (अभितः) चारों ओर से (नाभिमिव) बीच के नालरूप काष्ठ में लगे रहते हैं अथवा जैसे ऋत्विज् लोग और यजमान यज्ञ में मिलके (अग्निम्) अग्नि आदि के सेवन से जगत् का उपकार करते हैं, वैसे (सम्यंचः) सम्यक् प्राप्तिवाले तुम मिल के धर्मयुक्त कर्मों को (सपर्यत) तथा एक दूसरे का हित सिद्ध किया करो।

हे गृहस्थादि मुनष्यों! मैं ईश्वर (वः) तुमको (सध्रीचीनान्) सह वर्तमान, (संमनसः) परस्पर के लिए हितैषी, (एकश्नुष्टीन्) एक ही धर्मकृत्य में शीघ्र प्रवृत्त होने वाले, (सर्वान्) सबको (संवननेन) धर्मकृत्य के सेवन के साथ एक दूसरे के उपकार में नियुक्त (कृणोमि) करता हूँ। तुम (देवाः इव) विद्वानों के समान (अमृतम्) व्यावहारिक वा परमार्थिक सुख की (रक्षमाणाः) रक्षा करते हुए (सायंप्रातः) सन्ध्या और प्रातःकाल अर्थात् सब समय में एक दूसरे से प्रेमपूर्वक मिला करो। ऐसा करते हुए (वः) तुम्हारा (सौमनसः) मन का आनन्दयुक्त शुद्धभाव (अस्तु) सदा बना रहे।

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वितर्ते श्रिता।।
सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता।।
स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता
लोको निधनम्।।

(अथर्व. का. 12, सू. 5, म. 1-3)

हे स्त्री-पुरुषों! मैं ईश्वर तुमको आज्ञा देता हूँ कि तुम सब गृहस्थ मनुष्य लोग (श्रमेण) परिश्रम तथा (तपसा) प्राणायाम से (सृष्टा) संयुक्त (ब्रह्मणा) वेदविद्या परमात्मा और धनादि से (वित्ते) भोगने योग्य धनादि के प्रयत्न में और (ऋते) यथार्थ पक्षपातरहित न्यायरूप धर्म में (श्रिता) चलनेहारे सदा बने रहो।

(सत्येन) सत्यभाषणादि कर्मों से (आवृता) चारो ओर से युक्त (श्रिया) शोभायुक्त लक्ष्मी से (प्रावृता) युक्त, (यशसा) कीर्ति और धन से (परीवृता) सब ओर से संयुक्त रहा करो।

(स्वद्यया) अपने ही अन्नादि पदार्थ के कारण से (परिहिता) सबके हितकारी, (श्रद्धया) सत्य धारण में श्रद्धा से (पर्यूढा) सब ओर से सबको सत्याचरण प्राप्त करानेहारे, (दीक्षया) नाना प्रकार के ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि व्रत धारणा से (गुप्ता) सुरक्षित, (यज्ञे) विद्वानों के सत्कार, शिल्पविद्या और शुभगुणों के दान में (प्रतिष्ठिता) प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ करो और इन्हीं कर्मों से (निधनम् लोकः) इस मनुष्यलोक को प्राप्त होके मृत्युपर्यन्त सदा आनन्द में रहो। **...क्रमशः**

नम्रता वह मधुर जड़ है जिससे सब सद्गुणों की शाखाएँ निकलती हैं।

वैदिक धर्म की विशेताएँ

1. वैदिक धर्म संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों का उसी प्रकार आधार है जिस प्रकार संसार की सभी भाषाओं का आधार संस्कृत भाषा है जो सृष्टि के प्रारम्भ से अर्थात् 1,96,08,53,117 वर्ष से अभी तक अस्तित्व में है। संसार भर के अन्य मत, पंथ किसी पीर-पैगम्बर, मसीहा, गुरु, महात्मा आदि द्वारा चलाये गये हैं, किन्तु चारों वेदों के अपौरुषेय होने से वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

2. वैदिक धर्म में एक निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी ईश्वर को ही उपास्य माना जाता है। उसके स्थान पर अन्य देवी-देवताओं को नहीं।

3. ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात् कभी भी शरीर धारण नहीं करता।

4. जीव और ब्रह्म एक नहीं बल्कि दोनों की सत्ता अलग-अलग हैं और मूल प्रकृति इन दोनों से अलग तीसरी सत्ता है। ये तीनों अनादि हैं, तीनों ही एक-दूसरे से उत्पन्न नहीं होते।

5. वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टिक्रम के नियमों के अनुकूल तथा बुद्धि सम्मत हैं जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धान्त बुद्धि की घोर उपेक्षा करते हैं।

6. हरिद्वार, काशी, मथुरा, कुरुक्षेत्र, अमरनाथ, प्रयाग आदि स्थलों का नाम तीर्थ नहीं है। जो मनुष्यों को दु:ख सागर से पार उतारते हैं उन्हें तीर्थ कहते हैं। विद्या, सत्संग, सत्यभाषण, पुरुषार्थ, विद्यादान, जितेन्द्रियता, परोपकार, योगाभ्यास, शालीनता आदि शुभ तीर्थ हैं।

7. भूत-प्रेत, डाकिन आदि के प्रचलित स्वरूप को वैदिक धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता। भूत-प्रेत शब्द आदि तो मृत शरीर के कालवाची शब्द हैं और कुछ नहीं।

8. स्वर्ग के देवता अलग से कोई नहीं होते। माता-पिता, गुरु, विद्वान् तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि ही स्वर्ग के देवता होते हैं जिन्हें यथावत् रखने तथा यथायोग्य उपयोग करने से सुखरूपी स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

9. **स्वर्ग और नरक :** स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते, सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दु:ख विशेष का नाम नरक है। ये भी इसी संसार में शरीर के साथ भोगे जाते हैं। स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध में गढ़ी हुई कहानियों का उद्देश्य केवल कुछ निष्कर्मण्य लोगों का भरण-पोषण करना है।

10. **मुहूर्त :** जिस समय चित्त प्रसन्न हो तथा परिवार में सुख-शान्ति हो वही मुहूर्त है। ग्रह नक्षत्रों की दिशा देखकर पंडितों से शादी, ब्याह, कारोबार आदि के मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं है क्योंकि दिनों का नामकरण हमारा किया हुआ है, भगवान् का नहीं। अत: दिनों को हनुमान आदि के व्रतों और शनि आदि के साथ जोड़ना व्यर्थ अथवा अवैदिक है।

महाशय जयपाल आर्य

11. **राशिफल एवं फलित ज्योतिष :** ग्रह, नक्षत्र जड़ हैं और जड़ वस्तु का प्रभाव सभी पर एक-सा पड़ता है, अलग-अलग नहीं। अत: ग्रह नक्षत्र देखकर राशि निर्धारित करना एवं उन राशियों के आधार पर मनुष्य के विषय में भांति-भांति की भविष्यवाणियां करना नितान्त अवैज्ञानिक है। जन्मपत्री देखकर वर-वधु का चयन करने के बजाए हमें गुणकर्म, स्वभाव एवं चिकित्सकीय परीक्षण के आधार पर ही रिश्ते तय करने चाहिए। जन्मपत्रियों का मिलान करके जिनके विवाह हुए हैं क्या वे दम्पति पूर्णत: सुखी हैं? विचार करें राम-रावण तथा कृष्ण-कंस की राशि एक ही थी।

12. **चमत्कार :** दुनिया में चमत्कार कुछ भी नहीं है। हाथ घुमाकर चेन, लॉकेट बनाना एवं भभूति देकर रोगों को ठीक करने का दावा करने वाले क्या उसी चमत्कार विद्या से रेल का इंजन या बड़े-बड़े भवन बना सकते हैं? कैंसर, हृदय तथा मस्तिष्क के रोगों का बिना आप्रेशन उपचार कर सकते हैं? यदि वह ऐसा कर सकते हैं तो उन्होंने अपने आश्रमों में इन रोगों के उपचार के लिए बड़े-बड़े अस्पताल क्यों बना रखे हैं? वे अपनी चमत्कारी विद्या से देश के करोड़ो अभावग्रस्त लोगों के दु:ख-दर्द क्यों नहीं दूर कर देते? असल में चमत्कार एक मदारीपन है जो धर्म की आड़ में धर्मभीरु जनता के शोषण का एक तरीका है।

13. **गुरु और गुरुडम :** जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है अत: गुरु के प्रति सद्भाव रखना उचित है लेकिन गुरु को एक अलौकिक दिव्य शक्ति से युक्त मानकर उससे नामदान लेना, भगवान् या भगवान् का प्रतिनिधि मानकर उसका अथवा उसके चित्र की पूजा-अर्चना करना, उसके दर्शन

या गुरु नाम का संकीर्तन करने मात्र से सब दु:खों और पापों से मुक्ति मानना आदि गुरुडम की विष बेल है, वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध है। इनका परित्याग करना चाहिए।

14. मृतक कर्म : मनुष्य की मृत्यु के बाद उसके मृत शरीर को दाहकर्म करने के पश्चात् अन्य कोई करणीय कार्य शेष नहीं रह जाता। आत्मा की शान्ति के लिए करवाया जाने वाला गरुड़पुराण आदि का पाठ या मंत्र जाप इत्यादि धर्म की आड़ लेकर अधार्मिक लोगों द्वारा चलाया जाने वाला प्रायोजित पाखण्ड है अर्थात् वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध है।

15. राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि ऐतिहासिक महापुरुष थे न कि वे ईश्वर या ईश्वर के अवतार थे।

16. जो मनुष्य जैसे शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसको वैसा ही सुख या दु:ख रूप फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है।

17. मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है, चाहे वह स्त्री हो या शूद्र।

18. प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रोन्नति के लिए गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर चार ही प्रकार के पुरुषों की आवश्यकता है। इसीलिए वेद में चार वर्ण स्थापित किये हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

19. व्यक्तिगत उन्नति के लिए भी मनुष्य की आयु को चार भागों में बांटा गया है, इन्हें चार आश्रम भी कहते हैं। 24 वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य आश्रम, 25 से 50 वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम, 50 से 75 वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्रम और इसके आगे संन्यास आश्रम माना गया है।

20. जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता। अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं, चाहे वे किसी के भी घर उत्पन्न हुए हों।

21. भंगी, चमार आदि के घर उत्पन्न कोई भी मनुष्य जाति या जन्म के कारण अछूत नहीं होता। जब तक गन्दा तब तक अछूत है चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो, भंगी हो या अन्य कोई।

22. वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म में मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म करने पर पशु, पक्षी, कीट, पतंगे आदि का शरीर अपने कर्मों को भोगने के लिए मिलता है। जैसे अपराध करने पर मनुष्य को कारागार में भेजा जाता है।

23. गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान करने से पाप नहीं धुलते। वेद के अनुसार उत्तम कार्य करने से व्यक्ति भविष्य में पाप करने से बच सकता है। जल से केवल शरीर का मल साफ होता है, आत्मा का नहीं।

24. पंच महायज्ञ करना प्रत्येक गृहस्थी के लिए आवश्यक है।

25. मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा को संस्कारी, उत्तम बनाने के लिए गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों को करना सभी गृहस्थीजनों का कर्त्तव्य है।

26. मूर्तिपूजा, मूर्तियों का जल विसर्जन, जगराता, कांवड लाना, छुआछूत, जाति, पाति, जादू, टोना, डोरा, गंडा, ताबिज, शगुन, जन्मपत्री, फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, अन्धविश्वास, बलि प्रथा, सती प्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह आदि सामाजिक कुरीतियां वैदिक राह से भटक जाने के बाद हिन्दू धर्म के नाम से बनी हुई हैं, वेदों में इनका नाम भी नहीं है।

27. वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्यज्ञान को प्राप्त करके निष्काम भाव से शुभकर्मों को प्राप्त करता है और महापुरुषों की भांति उपासना से ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड़ लेता है। तब उसकी अविद्या (राग-द्वेष आदि की वासनाएं) समाप्त हो जाती हैं। मुक्ति में जीव 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष तक सब दु:खों से छूटकर केवल आनन्द का ही भोग करके फिर लौटकर मनुष्यों में सामान्य जन्म लेता है।

28. जब-जब मिले तब-तब परस्पर 'नमस्ते' बोलकर अभिवादन करें। यही भारत की प्राचीनतम वैदिक प्रणाली है।

29. वेद में परमेश्वर के अनेक नामों का निर्देश किया है जिनमें मुख्य नाम 'ओ३म्' है। शेष नाम गौणिक कहलाते हैं अर्थात् यथा गुण तथा नाम।

(संकलन : महाशय जयपाल आर्य)

बलिवैश्वदेव यज्ञ की अनिवार्यता व स्वरूप

मनमोहन आर्य

यज्ञ परोपकार के कार्यों को कहते हैं। यज्ञ ऐसा कार्य व कर्म है जिससे अपना भला होता है व दूसरों को भी लाभ पहुंचता है। हमारा भला दूसरों का भला करने से ही हो सकता है, दूसरों को हानि पहुंचा कर हमारा भला कभी नहीं हो सकता। इसका कारण यह है कि यह प्रकृति व सृष्टि सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर की बनाई हुई है। यह सृष्टि ईश्वर की जीवात्मारूपी-प्रजा जो मनुष्यों सहित अनेकानेक अगणित योनियों में है, के सुखोपभोग के लिए है। हमें सभी जीवात्माओं वा प्राणियों के जीवनयापन में सहयोग करना है। यदि हम सहयोग करते हैं तो यह भी एक यज्ञ है। यदि हम प्राणीमात्र के जीवन यापन में सहयोग के स्थान पर उसके विरोधी बनते हैं तो यह यज्ञ न होकर हानिकारक कर्म है जिसकी हानि हमें ईश्वरीय दण्ड के रूप में होती है। यज्ञ के बारे में ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं यज्ञ देवपूजा, संगतिकरण व दान का पर्याय है।

देवपूजा का अर्थ है चेतन व जड़ देवताओं की पूजा वा सत्कार। चेतन देवताओं में ईश्वर, माता, पिता, विद्वान् आचार्य व अन्य मनुष्य आदि सहित सभी प्राणी भी आते हैं। इनका सबका यथायोग्य सत्कार देवपूजा होती है। जड़ पूजा में मुख्यतः पंचमहाभूत व अन्य दैवीय शक्तियों की पूजा आती है। इनकी पूजा उनका सन्तुलन न बिगड़ने देना, इसका ध्यान रखना और सन्तुलन बनाये रखने के प्रति सावधान रहना व इसके लिए आवश्यक क्रियायें करना ही जड़ देवों की पूजा है। चेतन व जड़ देवों की पूजा हेतु ऋषि दयानन्द जी ने पंचमहायज्ञविधि का विधान किया है। ब्रह्मयज्ञ व सन्ध्या ईश्वर की उपासना व पूजा है। देवयज्ञ अग्निहोत्र ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित उसकी पूजा एवं सभी जड़ देवों की पूजा का कृत्य व कर्म है।

सन्ध्या से तो उपासक को ही लाभ होता है परन्तु देवयज्ञ से वायु व वृष्टि जल सहित सभी प्राकृतिक भौतिक देवों को लाभ पहुंचता है व वह पुष्ट व समर्थवान बने रहते हैं व बनते हैं। ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाकर यज्ञ किया है। वह सूर्य की किरणें पृथिवी पर भेज कर, उसके माध्यम से प्रकाश व ऊर्जा प्रदान कर, वायु बहाकर व जल की वृष्टि करके व अनेकानेक कार्य करके एक प्रकार का यज्ञ ही कर रहा है। हमारा यह यज्ञ उस बृहद् यज्ञ का ही एक छोटा रूप है जिससे अनेकानेक लाभ होते हैं जिनका ज्ञान सत्यार्थप्रकाश सहित वेद व ऋषियों के अन्य ग्रन्थों का अध्ययन कर किया जा सकता है।

पंच महायज्ञ विधि में ऋषि दयानन्द जी ने पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ का भी विधान कर उसकी विधि दी है। पहले चार यज्ञों में ईश्वरोपासना, देवयज्ञ में चेतन व जड़ पदार्थों का यज्ञ, पितृ व अतिथि यज्ञ में माता-पिता आदि वृद्धों सहित आचार्यों व ऋषियों आदि का सम्मान द्वारा यज्ञ हो जाता है। पांचवा यज्ञ मुख्यतः मनुष्येतर प्राणियों के लिए किया जाता है जिससे उन्हें सुखपूर्वक अपने जीवनयापन में किसी प्रकार की भी बाधा न आये अपितु सभी मनुष्यादि उसमें सहायक बनें। इस विषय पर विचार करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि ईश्वर ने यह सृष्टि न केवल कुछ व्यक्तियों के लिए अपितु अपनी समस्त जीव रूप प्रजा के लिए बनाई है। सभी जीवों का ईश्वर की सृष्टि पर समान अधिकार है। ईश्वर सभी जीवों को उनके कर्मानुसार भिन्न भिन्न योनियों में कर्म करने व फल भोगने के लिए भेजता है। वहां उन्हें उनके जीवनयापन व कर्म भोग में सहायता के लिए अनुकूल वातावरण मिलना चाहिये। ईश्वर तो उन्हें जीवन देने व उनका पालन करने में सहयोगी है ही, सभी मनुष्यों को भी उनके जीवनयापन में सहयोगी होना चाहिये। यही बलिवैश्वदेव यज्ञ का महत्त्व व प्रयोजन ज्ञात होता है। इसका कारण यह है कि हम अपने पूर्वजन्मों के कर्मों का सुख व दुःख रूपी फलों को भोगने के लिए इस संसार में आये हैं और हमारी ही भांति सभी मनुष्य व अन्य सभी प्राणी भी इसी निमित्त व प्रयोजन से संसार में परमात्मा द्वारा भेजे गये हैं।

यदि कोई मनुष्य व प्राणी किसी दूसरे प्राणी के सामान्य जीवनयापन में बाधक बनता है तो वह ईश्वर के नियमों को तोड़ता है, ऐसा अनुभव होता है। ईश्वर की व्यवस्था को भंग करने वाले मनुष्यों को जन्म जन्मान्तर में उसके कर्मों का फल अवश्य मिलता है। जो ईश्वर की व्यवस्था को भंग करता है उसे निश्चय ही दुःख रूपी दण्ड मिलता है जिसमें मनुष्य से इतर निम्न योनियों में जन्म लेकर अपने पापों को भोगना पड़ता है। अतः सभी मनुष्यों को इस विषय पर विचार कर व आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन व स्वाध्याय कर ईश्वर की व्यवस्था को जानने का प्रयत्न करना चाहिये और उसी भावना के अनुरूप अपने कर्तव्यों का निश्चय कर ईश्वर की वेदविहित आज्ञानुसार कर्म करने चाहिये। यदि ऐसा करेंगे तो निश्चय ही हम

राजा जैसा आचरण करता है, प्रजा उसी का अनुसरण करती है।

सुखी होंगे और संसार के सभी लोग भी सुखी व निरामय अर्थात् रोग व शोक रहित सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

हम देवयज्ञ करते हैं तो इससे मनुष्यों सहित सभी प्राणियों को लाभ होता है और हम अपने उस शुभ कर्म से इस जन्म व परजन्मों में ईश्वर से उसके फल प्राप्त कर लाभान्वित होते हैं। मातृ पितृ व आचार्यों सहित विद्वानों की सेवा सत्कार से भी हमें इस जन्म व परजन्मों में ईश्वर लाभ पहुँचाता है। गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी, अश्व, कुत्ता आदि अनेक पशु समाज में हमें दृष्टिगोचर होते हैं। इनसे हमें अनेक प्रकार से लाभ पहुंचता है। यह लाभ एक प्रकार से हम पर इनका ऋण होता है जिसे हमें बलिवैश्वदेव यज्ञ के रूप में उतारना होता है। इसे हम उनके प्रति अच्छा सहयोगपूर्ण व्यवहार करके पूरा कर सकते हैं। हमारे द्वारा उन्हें कष्ट न मिले अपितु हम उन्हें उनके भोजन आदि के द्वारा जितना सुख पहुंचा सके उतना ही उत्तम है।

ऐसा अनुभव होता है कि हमारे कारण पशु-पक्षी व अन्य प्राणियों को किसी प्रकार का भी यदि सुख होता है तो वह हमारा शुभ कर्म होता है और परमात्मा के द्वारा हमें उस कर्म का फल इस जन्म व परजन्मों में जाति, आयु और भोग के रूप में मिलता है। अत: हमें पशु-पक्षियों के प्रति विशेष रूप से सहिष्णु व संवेदनशील होना होगा और इसके लिए उनके प्रति मित्रता का भाव रखना होगा। ऐसा करके हम अपना इहलोक व परलोक सुखी व उन्नत बना सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ से वैदिक धर्म के पूर्वजों की यही परम्परायें चली आ रही हैं। मांस व मदिरा का सेवन घोर पाप व तामसिक कर्म है जिसका परिणाम दु:ख, रोग व अल्पायु सहित बुद्धि में विकार के रूप में ही होता है। इसके साथ

जन्म जन्मान्तरों में निम्न योनियों में भ्रमण कर दु:ख भोगने पड़ते हैं। यहां यह नियम लागू होता है जो जैसा बोयेगा वैसा ही काटेगा। बबूल का पेड़े बोयेंगे तो उसमें आम कदापि नहीं लगेंगे। पशुओं की हिंसा कर उन्हें दु:ख पहुंचा कर हम कभी सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकते।

ऋषि दयानन्द जी ने बलिवैश्वदेव यज्ञ की विधि भी पंचमहायज्ञविधि पुस्तक में दी है। उसका अध्ययन कर इस यज्ञ में निहित भावना को आत्मसात कर निर्दिष्ट विधि के अनुरूप कर्म व क्रियायें करनी चाहिये और शंका होने पर विद्वानों से उसका समाधान करना चाहिये। चीटीं से हाथी तक सभी मनुष्य व अन्य प्राणियों में हमारे समान ही आत्मायें हैं। उन सबमें परमात्मा भी विद्यामान है जो सबके कर्म फल भोग का साक्षी है और सबको सबके कर्मो का फलदाता है। अत: कर्म करते समय ईश्वर की सर्वव्यापकता व उसकी व्यवस्था को समझ कर ही कर्म करना चाहिये। यह ध्यान रखना चाहिये कि हमारा कोई भी कर्म उसकी व्यवस्था के विरुद्ध न हो। इसी के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

कविता : छेड़छाड़

छेड़छाड़ हुई थी मित्रों भारत के संस्कारों से।
छेड़छाड़ में मंदिर टूटे मुगलों की तलवारों से।।
छेड़छाड़ के कारण कान्हा, मथुरा मस्जिद में रोता है।
छेड़छाड़ के कारण राम आज भी तिरपालों में सोता है।।
छेड़छाड़ तो शिक्षा में लार्ड मैकाले की लागू है।
भारत के टुकड़े करने को वामपंथ बेकाबू है।।
इतिहास छेड़ा, वेद छेड़े, छेड़ी ग्रन्थों की भाषा।
खानपान को छेड़के, छेड़ी मानवता की परिभाषा।।
देशप्रेम को छेड़छाड़ के सेना तक का खाते हैं।
छेड़छाड़ करने वाले ही इतना क्यों गुर्राते हैं।।
खेल देश के छेड़ने वाले हेलीकॉप्टर तक को छेड़ गये।
रेल, कोयला, चारा छेड़ा और जंगलों तक के पेड़ गये।।
छेड़छाड़ को सहन कर भारत बंटा है टुकड़ों में।
छेड़छाड़ करके पनपते 'विद्रोही' जेएनयू के नुक्कड़ों में।।
छेड़छाड़ की संविधान से, कश्मीरी बेघर होता है।
वोट बैंक की छेड़कला से यहाँ बांग्लादेशी सोता है।।
भले गद्दारों की नजरों में भारत बस जमीन का टुकड़ा है।
हमको तो आता नजर यह प्यारी माँ का मुखड़ा है।।
कुछ जगे हैं और जगेंगे जिसने मन में ठानी हो।
देशद्रोही कभी सोचे भी ना देश से छेड़खानी को।।

साभार : नीरज आर्य जन्धेड़ी

दुर्बल और मर्यादाहीन व्यक्ति की संगति कभी नहीं करनी चाहिए।

Superstition : The Blind Faith

Pradeep Tyagi

Superstition is an irrational belief arising from ignorance or fear. There are superstitions for almost all aspects of our daily lives. Sometimes they are logical (for example don't walk under the ladder) but most of the time they are ridiculous. India is a country of diverse culture and tradition as well as of a lot of superstitions. We see them all around every day. Superstition is a belief that is not based on Human reason or scientific knowledge, but is connected with old ideas about magic, fear etc.

According to superstition if you walk under a ladder it brings you bad luck. The number 13 is unlucky. If a mirror in the house falls and breaks by itself, someone in the house will die soon. All windows should be opened at the time of death so that the soul can leave. If a black cat crosses our path then like a dead statue we stop and wait for someone else to pass first. The best thing about the country is that we continue to practice these superstitions even if we know that nothing is going to happen.

Belief in spirits, Ghosts and Witches is a common superstition. In our country every activity of life associated with some sort of superstition. It is supposed to be bad if someone sneezes behind or calls back a man who is leaving his home for a journey. It is believed that "Alakshami" the goddess of misfortune can bring bad luck to the shop owners or business. Shop owners hang lemon and seven green chilies at their door so that the goddess eats her favorite food, satisfy her hunger and leave without entering the shop. Putting a little dot of Kohl on the side of a child's forehead is very common in India. The practice is called "Nazar Utarna". It is done to protect the little kid from any evil eye.

It is believed that Goddess Lakshmi generally pays a visit after sunset so we don't sweep after sunset. These are some superstitions in our country which prevail in India and misguide people. Indians have a blind belief in Sadhus although the cases of cheating by Sadhus are generally heard. There are so many fake baba in our country even then people have blind faith on them. It is just because of Superstition or wrong belief system. Our belief system should be positive and powerful. Irrational belief system can spoil our life.

The best way to remove superstition is to educate people and give them light of reason. Generally the illiterate and ignorant people believe in superstition. Education should be spread widely to make the backward and superstition minded people enlightened. People should be properly educated and should be inspired to be hard working and honest. We should judge everything by the strong light of reason having firm faith in God.

If people are properly educated and encouraged to develop a scientific attitude and rational thinking then there is no doubt that superstition will die a natural death. We must do our best to remove all superstitions and ensure the real progress of nation. Superstition should be removed completely because it is a very big problem in our country. Social awareness can play a vital role to remove superstitions. At last I would like to say only one thing ***"Have faith but don't have blind faith."***

- **Pradeep Tyagi**
Warden, Gurukul KKR

शत्रु के गुण ग्रहण करने और गुरु के भी दोष बताने में संकोच नहीं करना चाहिए।

जीवन में संस्कारों का महत्त्व

सम्उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से संस्कार शब्द बनता है। मानव जीवन को उच्च दिव्य एवं महान् बनाने के लिए वैदिक संस्कारों का विशेष महत्त्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त 16 संस्कारों को करने का विधान हमारे ऋषि-महर्षियों ने वेदाज्ञा के अनुसार किया है।

'संस्क्रियते अलंक्रियते अनेन इति संस्कारः'

अर्थात् जिससे शरीर, मन एवं आत्मा अलंकृत, सुशोभित या परिष्कृत होते हैं, उत्तम और श्रेष्ठ होते हैं उसे संस्कार कहते हैं। आज संस्कारों के अभाव में ही मानव पशु से भी निम्नतर स्तर को प्राप्त होता चला जा रहा है। उसने अपने मानवतारूप धर्म का परित्याग कर दिया है। स्वधर्म को त्यागकर अर्थ को प्राप्त करने में अपना सब कुछ न्यौछावर कर रहा है। उसकी धन की प्रति अतृप्त लालसा भाई को भाई, पिता को पिता, बहिन को बहिन नहीं समझ रही है जिस कारण परिवार टूट रहे हैं।

आज एक-दूसरे के लिए स्वप्राणों को भी न्यौछावर करने वाले राम, लक्ष्मण, भरत जैसे भाई श्रवण कुमार के समान मातृ-पितृ भक्त, भीष्म के समान दृढ़ प्रतिज्ञ, हरिश्चन्द्र जैसे सत्यनिष्ठ, दयानन्द जैसा त्यागी, तपस्वी, समाज सुधारक एवं अखण्ड ब्रह्मचारी दूर-दूर तक दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं।

मानव को सुखी बनाने के लिए अनेकों प्रकार के भौतिक साधनों को उपलब्ध कराया जा रहा है क्योंकि आज के मानव की दृष्टि केवल भौतिक उन्नति तक ही सीमित रह गई है। हम भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण समझ बैठें है कि मानव का सबसे बड़ा प्रश्न रोटी का है। यदि रोटी का प्रश्न हल हो गया तो सभी समस्याओं का समाधान हो गया। लेकिन भोजन, आजीविका एवं भौतिक साधन प्राप्त कर लेने पर भी संस्कारों के अभाव में व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता, ये शाश्वत सत्य है। संस्कारवान् व्यक्ति भौतिक साधनों के अभाव में भी स्वयं को सुखी अनुभव करता है क्योंकि संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बनते हैं।

किसी वस्तु के पुराने स्वरूप को बदलकर उसे नवीन स्वरूप संस्कारों के द्वारा प्रदान किया जाता है। महर्षि चरक लिखते हैं -

'संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते'

आतिथ्य सत्कार से धन, यश, आयुष्य की प्राप्ति होती है।

अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों एवं दोषों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों के आधान करने को संस्कार कहते हैं। जिससे कि उसका स्वास्थ्य उत्तम बने तथा मन में पवित्र भावना हो और सत्कर्मों को करके शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति करता हुआ शरीर मन और आत्मा को सद्गुणों से अलंकृत करे।

जब बालक का जन्म होता है तब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। एक तो वे संस्कार हैं जिन्हें वह जन्म जन्मातरों से अपने साथ लाता है और दूसरे वे हैं जिनको अपने माता-पिता से संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से प्राप्त करता है, वे अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी।

वैदिक संस्कार मानव निर्माण की एक उत्तम योजना है। इस योजना में बालक को इस प्रकार के वातावरण से घेर दिया जाता है जिससे केवल अच्छे संस्कारों के पनपने का ही अवसर मिलता है, बुरे संस्कार चाहे पिछले हों या इस जन्म के अथवा माता-पिता या मित्रों से प्राप्त हुए हों उन्हें निर्बीज कर दिया जाता है।

जिस प्रकार सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओं को अग्नि में डाल देने से उनकी अशुद्धता नष्ट होकर वे शुद्ध एवं निर्मल हो जाते हैं, ठीक इसी प्रकार से वैदिक संस्कारों के माध्यम से बालक, बालिका के विगत जन्मों के अशुभ कर्मों के वासनारूपी दोषों को दूर कर उन्हें सद्गुणों से युक्त कर दिया जाता है जिससे कि वह मानव जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सफल हो सके।

जीवात्मा जन्म जन्मान्तरों में अनेक प्रक्रियाओं से गुजरता है। प्रत्येक जन्म में इस पर अच्छे या बुरे संस्कार पड़ते हैं। वैदिक संस्कृति में आत्मा को पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों को शुभ

संस्कारों के प्रभाव द्वारा समाप्त कर दिया जाता है। जिस समय व जिस क्षण भी जीवात्मा मानव शरीर के बन्धन में बंधता है, उसी समय और उसी क्षण वैदिक संस्कृति उस पर उत्तम संस्कार डालना आरम्भ कर देती है और जीवात्मा जब तक उस मानव शरीर में विद्यमान रहता है तब तक उस पर श्रेष्ठ संस्कार निरन्तर डाले जाते हैं क्योंकि जिन संस्कारों का प्रभाव उस जीवात्मा पर अधिक होगा वह उसी प्रकार का आगे आचरण करेगा। उसके पूर्व जन्म जन्मान्तरों के संस्कार यदि अशुभ हैं तो उनको शुभ संस्कारों के अत्यधिक प्रभाव से दबा दिया जाता है।

उदाहरण के लिए दूब घास के तिनको में अपनी गंध है लेकिन केसर की गंध की अपेक्षा कम है। यदि दोनों को एक साथ रख दिया जाता है तो दूब घास स्वयं की गंध कम होने के कारण केसर की गंध को ग्रहण कर लेती है और दूब से भी केसर की ही गंध आने लगती है। उसी प्रकार केसर की गंध कम है प्याज की गंध की अपेक्षा से। यदि कुछ दिनों तक केसर और प्याज को एक साथ रख दिया जाता है तो केसर की गंध दब जाती है और उससे भी प्याज की गंध आने लगती है तो पता चला कि जिसका अधिक प्रभाव है वह कम प्रभाव वालों पर स्वयं का प्रभाव डालने में समर्थ होता है।

इसी प्रकार पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों को भी वैदिक संस्कारों की अधिकता के कारण निर्बीज कर दिया जाता है। अत: श्रेष्ठ संस्कारों को प्रभाव मानव के जीवन पर्यन्त उसी आत्मा पर विद्यमान रहता है। जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं लेकिन (संस्कारद् द्विज उच्यते) संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य कहलाने का अधिकारी बनता है।

महर्षिप्रवर देव दयानन्द लिखते हैं-'**जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं इसलिए संस्कारों का करना अति उचित है।**' (संस्कार विधि भूमिका)

अत: स्पष्ट है कि संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बनते हैं और जब शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बन जायेंगे तो सन्तानों को भी अत्यन्त योग्य बनाया जा सकता है और जीवन के सर्वोपरि लक्ष्य मोक्ष सुख को भी प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सम्पूर्ण मानव जाति का परम कर्त्तव्य है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त स्वयं को उत्तम संस्कारों से घेरे रखें क्योंकि संस्कारों से ही जीवन उच्च, दिव्य एवं महान् बनता है। महर्षि दयानन्द ने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में भी यही लिखा है-'**संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवं आत्मा उन्नत बनते हैं।**'

- आचार्य विश्वेन्द्रार्य

आर्य समाज कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश)

कविता : कन्याएँ कितनी महिमामयी

कन्याएँ कितनी महिमामयी जो संवारती दो कुलों को।
कन्याएँ कितना प्यारा धन, जो न रुचता बस दुष्कुलों को।।
दुष्कुल करते इनकी हत्या, लोक में आने से ही पूर्व।
वे न समझते इनकी महिमा, प्रभु ने जो दी इन्हें अपूर्व।।
दिया प्रभु ने कन्याओं को, मातृशक्ति का इक वरदान।
भर दिया हृदय में इनके ही, दया, ममता का अनुपम दान।।
विनम्रता और कोमलता में, क्या कोई है इनके समान।
बसते हैं बस वहीं देवता, जहाँ होता इनका सम्मान।।
जहाँ न मिलता इनको सम्मान, क्रियाएँ सभी होती निष्फल।
कोई भी देश न देख सके, कन्याओं बिना स्वयं सुंदर कल।।
हाय! पुत्रियों के जन्म से ही, हम क्यों हैं डूबते शोक में।
पर होवे न इनका जन्म तो होवे पुत्र कैसे लोक में।।
यदि देवी देवकी न होती, कृष्ण-सी आत्मा कहाँ पाते।
उस योगिराज की गीता का वह ज्ञान कहाँ से हम पाते।।
यदि जीजाबाई न होती, तो क्या वीर शिवाजी हम पाते।
होती न यदि लक्ष्मीबाई तो मर्दानी शब्द कहाँ से पाते।।
आदर्श माता ने ही एक था दिया हमें वह दयानन्द।
जिसने वैदिक शिक्षाओं से दिया जन-जन को सौख्यानन्द।।
वह विद्यावती न होती यदि मिल जाता क्या वह हमें सिंह।
इतिहास में स्वाधीनता के, हैं सुनाम जिसका भगत सिंह।।
नहीं लोक में होती माता वही रामदुलारी यदि यहाँ।
वह लाल बहादुर शास्त्री-सा लाल महान् मिलता कहाँ।।
बदलो अपनी निकृष्ट सोच, मानो अमूल्यतम कन्या को।
कन्या भ्रूण हत्या का पाप पाओ न नष्ट कर कन्या को।।
कन्या भ्रूण हत्या करके क्यों पाप के भागी बनते हो।
ईश्वर की न्याय-व्यवस्था में क्यों दण्ड के भागी बनते हो।।

रचना : प्रियवीर हेमाइना।

जिस कार्य को करने के बाद पछताना पड़े, ऐसा कार्य कभी नहीं करना चाहिए।

मानव जीवन हेतु पेड़-पौधों का महत्त्व

मानव सभ्यता के विकास में पेड़ों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पेड़ों के अस्तित्व पर ही मनुष्य एवं अन्य प्राणियों का जीवन आधारित है। पेड़ एक ऐसी प्राकृतिक सम्पदा है जिसका यदि विनाश होता है तो मनुष्य जीवन की सुखद संभावनाओं की आशा नहीं की जा सकती है। आँकड़ों के आईने में देखें तो जब से मानव सभ्यता का विकास क्रम प्रारम्भ हुआ है, तब से लेकर अब तक वृक्षों की संख्या में 46 प्रतिशत तक की कमी आयी है। एक अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि विश्व में करीब तीन लाख करोड़ पेड़ हैं, परन्तु इनकी संख्या अब लगातार सिमटती चली जा रही है।

सेटेलाइट इमेजरी अर्थात् उपग्रह के माध्यम से लिए गये चित्रों के माध्यम से जो पेड़ों का आँकड़ा पता चलता है, उसे प्रतिष्ठित पत्रिका **'नेचर'** में प्रकाशित किया गया है। उसके अनुसार दुनिया में अभी भी ऐसे दुर्गम स्थलों पर जंगल का विस्तर है, जहाँ मानव का पहुँचना अत्यन्त दुष्कर है क्योंकि इन जंगलों में एक तो सुगम रास्ता नहीं है, दूसरे खतरनाक वन्यजीवों की मौजूदगी है। अत: इनका जलवायु के लिए प्रभाव तो है परन्तु ये मनुष्यों के लिए कम प्रभावी हैं अर्थात् जहाँ पर पेड़ होने चाहिए, वहाँ कम हैं या नहीं के बराबर हैं। 'नेचर' के अनुसार पेड़ो की उच्च सघनता रूस, स्कैंडीनेविया और उत्तरी कोरिया के उप-आर्कटिका क्षेत्रों में पायी गई है।

विश्व के सघन वनों में 24 प्रतिशत पेड़ हैं। पृथ्वी पर उपस्थित 43 प्रतिशत अर्थात् लगभग 1.4 लाख करोड़ पेड़ उष्णकटिबंधीय वनों में हैं। इस संबंध में चिन्ताजनक पहलू यह है कि वनों की या पेड़ों की घटती दर भी इन्हीं जंगलों में सबसे अधिक है। इसी प्रकार 22 प्रतिशत पेड़ शीतोष्ण क्षेत्रों में हैं। एक और सर्वेक्षण के अनुसार, विश्व के सभी सघन वनों की संख्या 4 लाख से भी अधिक है। मानवीय गतिविधियों एवं उनके जंगलों में हस्तक्षेप के कारण पेड़ों की संख्या में निरन्तर गिरावट आ रही है। जिन वन क्षेत्रों में मनुष्य की आबादी बढ़ी है, उन क्षेत्रों में पेड़ों का घनत्व भी तेजी से घटा है। वनों की कटाई, भूमि के उपयोग में बदलाव, वन प्रबंधन और मानवीय हस्तक्षेप के कारण विश्व में लाखों पेड़ प्रतिवर्ष कम हो रहे हैं। अपने देश समेत समस्त विश्व में अनियंत्रित औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, बड़े बाँध एवं राजमार्गों के निर्माण से जंगल समाप्त हो

रहे हैं।

ऐसे समय में जब विश्व के सभी पर्यावरणविद् और वैज्ञानिक, जलवायु संकट के खतरे से मानव को लगातार आगाह कर रहे हैं तब यह पहलू चिन्ताजनक हो जाता है कि उनकी चेतावनी को दरकिनार करके पेड़ों को काटने के दुष्कृत्य में कोई कमी नहीं आयी है। विश्व में पेड़ों की घटती संख्या चिन्ता का विषय है। यह कमी भूमंडलीय आर्थिक उदारवाद के बाद आयी है, जब विकास के नाम पर जंगलों का सफाया होता चला गया। पिछले 15 वर्षों में ब्राजील में 17 हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में वनों का विनाश किया गया है।

एक सर्वे के अनुसार भारत में 1981 से 1990 के बीच प्रतिवर्ष वनों की विनाश दर 0.6 प्रतिशत रही है। यह आँकड़ा विश्व के वनों की विनाश दर की तुलना में अधिक है अर्थात् हम जंगलों के विनाश में बहुत आगे बढ़ चुके हैं। हमारे देश में इस प्रकार वनों का विनाश होना एक अत्यन्त चिंतनीय बात है, क्योंकि अपनी संस्कृति में वनों को देवता माना जाता है और पेड़ों को पूजनीय। हम पेड़ों को इसलिए देवता मानते हैं क्योंकि उनसे हमें फल, ईंधन और इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। देने वाले को ही तो देवता कहता जाता है। इसके बावजूद वनों का विनाश एवं पेड़ों की कटाई -अत्यन्त चिंतनीय विषय है। हम अपने स्वार्थ में इतने अंधे हो गये हैं कि इन जीवनदायी पेड़ों को काटते ही चले जा रहे हैं।

आँकड़ों के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष 70 लाख हेक्टेयर की गति से वन लुप्त हो रहे हैं। वनों के विनाश की बढ़ी गति से 2010 से 2014 के 4 वर्षों में 9 प्रतिशत वन क्षेत्र विलुप्त हो चुके हैं। 2040 तक 17 से 35 प्रतिशत सघन वन मिट जाएंगे। उस समय तक स्थिति और विकराल हो जाएगी। 20 से 75 दुर्लभ पेड़ों की

प्रजातियाँ प्रतिदिन नष्ट होने लगेंगी। इसके परिणामस्वरूप आगामी 15 वर्षों में वृक्षों की 15 प्रतिशत प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएंगी। इनकी विलुप्ति का प्रभाव धीमा एवं गहरा होता है क्योंकि प्रकृति में सहयोग एवं सहकार की महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है। एक पेड़ दूसरे पेड़ को विकसित करने में सहयोग प्रदान करता है। पेड़ों की विलुप्ति मानव जीवन के लिए अत्यन्त घातक है।

भारतीय अनुसंधान परिषद् के आकलन के अनुसार उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में एक हेक्टेयर के वन से 1.41 लाख रूपये का लाभ होता हैं इसके साथ ही 50 वर्षों में एक वृक्ष 15.70 लाख रूपये की लागत का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ देता है। पेड़ लगभग 3 लाख रूपये मूल्य की भूमि की नमी बनाए रखता है। 2.5 लाख रूपये मूल्य की ऑक्सीजन और 2 लाख रूपये मूल्य के बराबर प्रोटीन का संरक्षण करता है। वृक्ष की उच्च उपयोगिता में वह 5 लाख रूपये मूल्य के समतुल्य वायु व जल प्रदूषण नियंत्रण और 2.5 लाख रूपये मूल्य के बराबर की भागीदारी पक्षियों, जीव-जन्तुओं व कीट-पतंगों के आश्रयस्थल को उपलब्ध कराने के रूप में करता है। वृक्षों की इन्हीं मूल्यवान उपयोगिताओं को ध्यान में रखकर हमारे ऋषि-मुनियों ने इन्हें देवतुल्य माना है और इनके महत्त्व को पूजा से जोड़कर संरक्षण के अनूठे व दीर्घकालिक उपाय किये परन्तु विकास के नाम पर मनुष्य के अहंकार व क्षुद्र स्वार्थ ने जनजीवन के प्रकृति से गहरे आत्मीय संबंध को नकार दिया है और इसी का परिणाम है कि प्रकृति हमसे विक्षुब्ध हो गई है।

पेड़ों के महत्त्व को और भी अनेक रूपों में देखकर क्रियात्मक अध्ययन किया जाता है। पेड़ों की तुलना अब शीतलता पहुँचाने वाले नियुक्त उपकरणों के साथ भी की जाती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार एक स्वस्थ वृक्ष जो शीतलता देता है, वह 10 वातानुकूलित संयंत्रों के 20 घंटे लगातार चलने के बराबर होती है। घरों के आस-पास लगे पेड़ भी वातावरण को शीतलता प्रदान करते हैं। घरों के पास लगे पेड़, वातानुकूलन की आवश्यकताओं को 30 प्रतिशत तक घटा देते हैं। इससे 20 से 30 प्रतिशत तक बिजली की बचत होती है। एक एकड़ क्षेत्र में लगे वन, छह टन कार्बन-डाइ ऑक्साइड अवशोषित करते हैं और इसके ठीक विपरीत चार टन ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं जो 18 व्यक्तियों की वार्षिक आय के बराबर होती है।

प्रदूषणनाशक वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते हैं और पर्यावरण को स्वच्छ, साफ एवं समृद्ध करते हैं। पीपल जैसे वृक्षों में धुआँ तथा धूल को सोखने की असीमित शक्ति होती है। पीपल तो 4.15 प्रतिशत तक धुआँ सोख लेता है, इसलिए तो इसे देववृक्ष कहते हैं। इसी प्रकार तुलसी हमें शुद्ध वायु प्रदान करती है तथा घातक कृमि, कीटों को नष्ट करती है। यह हमें दीर्घायु प्रदान करती है। इसलिए कहते हैं -

तुलसीकाननं चैव गृहं यस्यावतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थभूसमाह नायन्ति यमकिंकरा।।

अर्थात् तुलसी घर को तीर्थ बना देती है, वातावरण को पवित्र एवं दिव्य बनाती है। इस पवित्रता एवं दिव्यता के आलोक-प्रकाश में मृत्यु के दूत यहाँ नहीं पहुँच पाते हैं। अत: हमें वृक्षों को पूजनीय मानकर संरक्षित एवं संवर्द्धित करना चाहिए। वृक्ष हमारे लिए जीवन तत्त्वों का सृजन करते हैं, इसलिए हमें भी वृक्षों के विकास में सहायक होना चाहिए तथा उनके सेवा, संरक्षण एवं संवर्द्धन में हमारा यथेष्ट योगदान होना चाहिए।

चाणक्य के कुछ अमर कथन

1. दुनिया की सबसे बड़ी ताकत पुरुष का विवेक और महिला की सुन्दरता है।
2. हर मित्रता के पीछे कोई स्वार्थ होता है, यह कटु सत्य है।
3. अपने बच्चों को पहले 5 वर्ष तक खूब स्नेह करो। 6 वर्ष से 15 वर्ष तक कठोर अनुशासन और संस्कार दो। 16 वर्ष से उनके साथ मित्रवत व्यवहार करो। अपनी संतति ही आपके सबसे अच्छी मित्र है।
4. दूसरों की गलतियों से सीखो, अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने को तुम्हारी आयु कम पड़ेगी।
5. किसी भी व्यक्ति को बहुत ईमानदार नहीं होना चाहिए क्योंकि सीधे वृक्ष ही सबसे पहले काटे जाते हैं।
6. अगर कोई सर्प जहरीला नहीं है, तब भी उसे जहरीला दिखना चाहिए। दंश भले ही न हो पर दंश दे सकने की क्षमता का दूसरों को अहसास करवाते रहना चाहिए।
7. कोई भी काम शुरु करने से पहले तीन सवाल स्वयं से करें - मैं ऐसा क्यों करने जा रहा हूँ? इसका क्या परिणाम होगा? क्या मैं सफल रहूँगा?
8. भय को समीप न आने दों अगर यह नजदीक आये तो इस पर हमला कर दो अर्थात् भय से भागो मत इसका सामना करो।
9. काम का निष्पादन करो, परिणाम से मत डरो।
10. सुगन्ध का प्रसार हवा के रूख का मोहताज होता पर परन्तु अच्छा सभी दिशाओं में फैलती है।की कमजोर है।

जो समय पर कार्य कर लेते हैं, वे बाद में पछताते नहीं।

खजूर और अंगूर कितने पास कितने दूर

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पन्थी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

खजूर के फल तो मधुर स्वादिष्ट गुणकारी होते हैं। उनकी लालसा से एक व्यक्ति खजूर के पेड़ पर चढ़ता ही चला गया। बहुत ऊपर पहुंचने के बाद खजूर अब भी उसकी पकड़ से दूर थे, तब उसने नीचे की ओर देखा और दंग रह गया। हाय! मैं इतने ऊपर और धरती कितने नीचे! अब तो मैं गिर ही पड़ूंगा? ईश्वर! मुझे बचाओ। दया करो। फल नहीं चाहिए, मुझे नीचे उतरने में सफल बनाइए।चढ़ते समय तो उसने अपने किसी परिजन-पुरजन की झलक नहीं स्वीकार की, क्योंकि उसके खजूर बंट जाते और उसे कम पड़ जाते, पर यदि वे पेड़ के नीचे भी खड़े रहते तो उसे इतना अधिक भय नहीं रहता किन्तु अब अकेले पड़ जाने पर उसका भय बढ़ता ही जा रहा था।

इसीलिए अब उसने परमेश्वर को साझीदार बनाने का निश्चय कर लिया था। खजूर न सही, ईश्वर मुझ बचालो, मुझे नीचे उतार दो। मैं घर से रुपये लाकर तुम्हारा भोग लगाऊंगा। सबको प्रसाद वितरित कर खिलाऊंगा। प्रभु-स्मरण संकल्प से उसका भय कम हुआ और वह पेड़ के आधे भाग तक उतर आया। सोचने लगा बोल दिया तो सोचे हुए रुपयों के आधे भाग का प्रसाद तो चढ़ा ही दूँगा। ज्यों ज्यों वह नीचे उतरता गया, उसके बोले गये प्रसाद की मात्रा कम होती गयी। अब जब वह कूद कर एंक दम नीचे उतर आय तो बोला- जान बची खजूर भुलाये, उतरे बुद्धू नीचे आये। चढ़ गये हम उतर गये हम, व्यर्थ बुलाये ईश्वर तुम।।

जो लोग ऊपर ही ऊपर देखते हैं और नीचे की ओर मुड़कर झांकते नहीं, तो उनकी यही दशा होती है कि वे शरीर से नीचे गिरते है तो उन्हें थाम लेती है धरती और जब वे चरित्रहीनता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार-दुराचार के कारण पतित होकर नीचे गिरते हैं तो धरती माता भी उन्हें स्थान नहीं देती है और उन्हें अपने कलंकित मुख को छिपाने के लए हथकड़ी में जकड़ कर जाना पड़ता है - बंदीगृह। वेद माता का कथन है :

विशां च वै स सबन्धूनां चान्नस्य चान्नाद्यस्य,
च प्रियं धाम भवति य एवं वेद।।
(अथर्ववेद 15.8.3)

मंत्राशय यही है कि मनुष्य होने की विद्वता-योग्यता उसके मात्र स्वपोषण में नहीं, प्रत्युत पहले पर पोषण फिर स्वयं पोषण के व्यवहार से परिलक्षित होती है। इसके लिए वह पुरुषार्थपूर्वक जो अन्न-धन अर्जित करता है, उसे अधिकाधिक स्वादिष्ट ही नहीं स्वास्थ्यवर्धक व्यंजनों का रूप देकर अकेला ही नहीं, अपने बन्धु बान्धवों के साथ मिलकर उपभोग करता है। इसको परमात्मा का आश्रय तो मिलता ही है, सर्वहितकारी होने से संसार में भी प्रतिष्ठित हो जाता है। गांव, देहात में रहने वाले श्रमजीवी लोग **'मेरे बीसों नाखूनों की कमाई है'** कहकर अपने उत्पादन व उपलब्धि पर गर्व करते हैं। वे झोपड़ी में रह लेते है, साधारण शाक रोटी खा लेते हैं किन्तु सायंकाल विश्राम के क्षणों में प्राय: दूरदर्शन कम, रामायण चर्चा व कीर्तन कर प्रसन्न रहते है और गहन निद्रा प्राप्त करते व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हैं। उनका आत्म सन्तोष निम्नांकित दोहे में उमड़ पड़ता है:-

देख परायी चूपड़ी, मत ललचावे जीभ।
रूखा-सूखा खाय के, ते ठण्डा पानी पीव।।

उनको लक्कड़ हजम, पत्थर हजम, जो करते शारीरिक श्रम। इसे आप अपने साथ मत जोड़ देना, जो किसी भी रूप में सड़क पुल व भवन निर्माण कार्य से जुड़े होतें, भरपूर वेतन-भत्ता ग्रहण करते हुए भी लक्कड़, पत्थर लोहा भी हजम कर जाते हैं किन्तु उन्हें पचता नहीं और अन्तत: बेडियों में जकड़कर मुँह छिपाते हुए पकड़े जाते हैं।

एक किसान प्रभात बेला में अपने खेतपर काम करने के लिए निकला। उसकी पत्नी ने मोटे-मोटे आठ टिक्कड़ (रोटी) प्याज-चटनी सहित उसके प्रातराश एवं मध्याह्न प्राश के लिए बांध दिये थे। उसके खेतों के समीप एक कुआँ व गलियारा था, जहाँ बैठकर यात्री किंचित विश्राम करके आगे प्रस्थान कर जाते थे। वहीं पर बैठकर एक योग्य वैद्यजी अपनी थकान मिटा रहे थे। उन्होंने देखा कि किसान ने स्वादपूर्वक चार रोटी खा ली और ऊपर से एक लोटा पानी पी लिया।

वैद्यजी ने किसान को परामर्श दिया- जो भोजन के तत्काल बाद भरपूर पानी पीता है वह बीमार होकर अल्पकाल में मर जाता है। किसान ने पूछा- वैद्यजी बताइए फिर किस समय पानी पीना

उचित समय पर काम करने वाले का ही श्रम सफल होता है।

चाहिए? वैद्यजी ने कहा- प्यास लगे तो भोजन के बीच में पानी पी सकते हैं। किसान ने शेष बची चारो रोटी खा ली और बोला -अब ठीक है वैद्यजी! उन्होंने हंसते हुए कहा- तुझे कुछ नहीं होगा मित्र, श्रमजीवी दीर्घजीवी होता है। किंचित चिन्ता मत कर।

सायंकाल को उसी गलियारे से बचपन के दो मित्र जिधर जा रहे थे, उधर से एक सन्त इधर आ रहे थे। मित्रों ने पूछा- महात्मन् आगे कोई खतरा तो नहीं है? महात्मा ने बताया- खतरा है, मार्ग में दो नागिन पड़ी हैं, उनसे बचकर निकल जाना, अन्यथा वे तुम्हें डस लेंगी। यहाँ पर दोहे का एक शब्द '**चू पड़ी**' ने अपना अर्थ बदल लिया। किसी महिला यात्री की एक अंगूठी, एक जंजीर उसके शरीर से चू पड़ी अर्थात् गिर गयी थी। मित्रों ने कहा- महात्मा भी कितने मूर्ख होते हैं। यहाँ नागिन तो कहीं नहीं है, शायद इन आभूषणों को ही महात्मा नागिन बता रहे होंगे। पुराने मित्र परस्पर इस बात पर गुर्राने लगे- कौन सोने की जंजीर लेगा और कौन अंगूठी? इसी बटवारे में दोनों लड़ मरे। चू पड़ी के इसी आशय को आगे बढ़ाते हैं।

पहले जो खजूर को ऊपर जाकर तोड़ने के खतरे की चर्चा हुई, आगे उनकी चर्चा है, जिनको तोड़ने के लिए खजूर की भांति ऊपर चढ़ना नहीं पड़ता। इनमें से एक है अंगूर, जिसकी लता होती है। इसके फलों को सुगमता से तोड़ लिया जाता है, दूसरा है महुआ जो होता तो पूरा वृक्ष है किन्तु इसके फल पककर मधुर हो जाते है और स्वत: ही टपकते रहते हैं। इन्हें तोड़ने के लिए खजूर पर चढ़कर लंगूर नहीं बनना पड़ता है। सभी वृक्ष-वनस्पतियाँ मानव प्राणियों की संजीवनी ऊर्जा का आधार व जीवन-माधुर्य प्रदाता है, उनका यथोचित उपयोग करना चाहिए।

मधु वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव:।
माध्वीर्न: सन्त्वोषधी:।।

(यजु. 13.27)

पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने मनोहारी सार यों प्रस्तुत किया है। जो अपने जीवन में सब क्रियाऐं ऋतु के अनुसार करते हैं वही ऋतायन हैं। उनकी सब क्रियाएं ठीक स्थान व ठीक समय पर होती है। ऋत का अर्थ यज्ञ भी है। इनका जीवन यज्ञिय होता हैं ये लोग स्वार्थ से ऊपर उठकर यज्ञमय जीवन वाले होते हैं। 'सर्वभूतहिते रत:' होते हैं। इस (ऋतायते) ऋतमय जीवन वाले के लिए (वाता:) वायु मधुर होकर बहती हैं, हानिकारक नहीं होती। (सिन्धव:) नदियाँ भी इनके लिए मधुर बनकर (क्षरन्ति) चलती है। नदियों का जल सदा स्वास्थ्यवर्धक होता है। (न:) हम ऋत का पालन करने वालों के लिए (औषधी:) औषधियाँ (माध्वी:) माधुर्य वाली (सन्तु) हों। यह तो रही वेद की दिशा, किन्तु किसी मान्य हिन्दीकोश को उठाकर देख लीजिये, तो वहाँ लिखा मिलेगा - माध्वी अर्थात् मद्य, महुए की बनी मदिरा। इसी प्रकार अंगूर के पर्याय द्राक्षा से शारीरिक क्षीणता निवारक द्राक्षासव तो कम बनता है, मदिरा अधिक बनती है, जिसकी सर्वप्रचलित संज्ञा पड़ गयी है -**अंगूर की बेटी।**

मदिरा के कारण देश में सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ है, जिसका पता आप दूरदर्शन श्रृंखलाओं से लगा सकते हैं, जहाँ ग्राम, नगर की नारियाँ, पुत्री, पुत्रवधुए हाथों में लाठी-डंडा लेकर इसके विरोध में सत्याग्रह करती हैं। वे राजनेता भी हैं जो शासनासन से मद्य पर प्रतिबन्ध लगाते हैं तो विपक्षी प्रतिबन्ध में रोड़े अटकाते हैं। इन्हीं दुर्व्यवस्थाओं के कारण एक मदिरा ही क्या अपमिश्रण से ग्रस्त सभी खाद्य विषैले हो रहे हैं। पापनाशिनी गंगा को धनलोलुप लोगों ने तापशापिनी बना दिया है।

अतिथि परिव्राट महात्मा से उपदेश की इच्छा से सम्राट उद्यान में पहुंच गये। अभिवादन के बाद बोले- स्वामिन मुझे कुछ शिक्षा दीजिए। महात्मा ने कहा- ठीक है, शिक्षा मैं नहीं आप स्वयं देगें। यदि आप रेगिस्तान में असह्य प्यास के मारे व्याकुल हो उठें और श्रीमान को कोई आधे राज्य के बदले एक लोटा पानी दे, तो लोगे कि नहीं? सम्राट बोल पड़े अवश्य ही लेना पड़ेगा। महात्मा ने फिर पूछा -यदि उस पानी को पीकर आपका पेट फूलने लगे और मूत्र रूक जाये। वेदना से आप कराह उठें। आपको स्वस्थ करने के लिए कोई वैद्याचार्य आपके आधे राज्य की मांग करे तो आप क्या करेंगे? स्वामिन ऐसी दशा में शेष बचा आधा राज्य भी दे दूँगा। महात्मा बोले, ऐसे राज्य- ऐश्वर्य पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए जो एक लोटे पानी और फिर शरीर से उसका विकार दूर करने के लिए बिक जाये। राज्य करना चाहिए किन्तु निरभिमानता के साथ राज्य-प्रजा की पितृवत पालना के लिए करना चाहिए। कवि ने यही कहा है :-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी बिना न ऊबरे, मोती-मानुष-चून।।

- देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़

राम और आर्यसमाज

आर्यसमाज की यह स्पष्ट धारणा है कि आज राम शब्द दशरथ के पुत्र के लिए अधिक प्रसिद्ध हो गया हैं तभी तो दूसरे पक्ष को यह कहना पड़ता है कि मेरा राम दशरथ का बेटा नही है। हाँ, ऐसों को फिर कुल, पिता के नाम वाले विशेषण साथ में संयुक्त नहीं करने चाहिएं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि राम शब्द अनेक रूपों में प्रयुक्त होता है। जैसे कि अन्य हरि, नारायण आदि शब्द हैं। तब व्यवहार में प्रकरण और विशेषण अलग-अलग करते हैं कि कौन शब्द किसके लिए आया है।

ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जो कर्मफल की व्यवस्था के अनुसार इस सारे जग को बनाता और चलाता है। इसीलिए वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, नित्य आदि गुण कर्मवाला है। ईश्वर को मानने वाले आस्तिक कहलाते हैं। हाँ, उनमें से बहुत सारे ऐसे भी होते हैं, जो कि ईश्वर को(किसी भी रूप में) मानना चाहिए, इतने तक ही सीमित होते हैं। इसके साथ विचारशीलों की यह धारणा होती है, जिसका जैसा स्वरूप है, उसको वैसा ही होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक पदार्थ का एक व्यवस्थित स्वरूप होता है। यही बुद्धिमता व वैज्ञानिकता है। अत: विचारशील ईश्वर का विशेष स्वरूप स्वीकार करते हैं। ऐसों का विचार है कि जब ईश्वर नित्य हैं तो उसका जन्म-मरण से जुड़ा हुआ और विशेष स्थान, समय से सम्बन्ध रखने वाला स्वरूप नहीं हो सकता है। आज लाखों ही नहीं करोड़ों ऐसे लोग हैं जो अपने धर्मशास्त्रों और तर्क के आधार पर दृढ़ विश्वास रखते हैं कि ईश्वर सत्य, नित्य, अजर, अमर, अविनाशी है।

यही बात महामानव, महापुरुष, युगपुरुष, इतिहासपुरुष पर भी लागू होती है। वस्तुत: वही महान् कहलाता है जो अपने अनोखे ज्ञान, कार्यक्षमता, जीवन के कार्य-कलाप से औरों की अपेक्षा हर तरह से आगे निकल जाता है। प्रत्येक महापुरुष देशविशेष, कालविशेष, धर्मविशेष और विशेष भाषा, वर्ग, कार्यक्षेत्र से भी सम्बद्ध होता है। इसके साथ वह अपने ज्ञान, जीवन के कार्यकलाप और योग्यता से भी सीमित होता है। अत: तब सभी उसको पूरी तरह से स्वीकार करें, यह जरूरी नहीं है।

बहुत सारे ऐसे भी हैं, जो अवतार, पैगम्बरपन के कारण कुछ को ईश्वर के साथ दूसरे रूप में भी स्वीकार करते हैं। ऐसी स्थिति में इन दोनों रूपों, स्थितियों की रूपरेखा स्पष्ट हो जाने पर निष्पक्ष रूप ये यह बात विचारणीय है कि श्रीराम को किस रूप में प्रस्तुत करने पर उनका महत्त्व, व्यापकता बढ़ती है या श्रीराम का जन-जन के हृदय में स्थान व्यापक होता है।

गौरव किस में : किसी को गौरव, यश, कीर्ति, नाम तभी प्राप्त होता है जब वह पूरी तरह से ठीक, अच्छा, जचावयुक्त होता हैं जो भ्रष्ट उपाय को अपनाये बिना औरों से जितना अधिक आगे निकल जाता है, वह उतना ही अधिक गौरवशाली कहलाता है। जैसे संसार में धन जहाँ परिश्रम से उपार्जित होता है, वहाँ पूर्वजों की सम्पत्ति के रूप में या लाटरी, जुआ, शर्त से भी प्राप्त होता है। इन सभी में से जो अपनी मेहनत, ईमानदारी से धनी बनते हैं वे ही उत्कृष्ट होते हैं और वे ही धन के मूल्य को सही रूप में आंकने के कारण उसका विनिवेश, विनियोग, उपयोग उचित करते हैं। अत: सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। इसी प्रकार अवतारपन की अपेक्षा अपने परिश्रम, चरित्र से महान् बनने वाले स्वत: श्रेष्ठ हो जाते हैं।

कोई व्यक्ति सबसे अधिक क्रियाशील, सफल, विजयी तभी होता है, जब उसमें यह आत्मविश्वास, स्वाभिमान जागता है कि जब वह मेरे जैसा या मेरे से कम भी सफल, विजयी हो सकता है या हो गया, तो मैं क्यों नहीं हो सकता। इसीलिए कहा गया है :-

'तीव्रसंवेगानामासन्न:' (योग0 1.21)

अर्थात् जिनमें जितनी अधिक तड़प, दृढ़ इच्छा, तत्परता, आत्मनिर्भरता होती है, वे उतने ही जल्दी सफल, विजयी होते हैं।

श्रीराम को जब हम महामानव स्वीकार करते हैं, तो उनसे समस्तर पर प्रेरणा, स्पर्धा करना सरल हो जाता है। ऐसी स्थिति में श्रीराम से प्रेरणा, प्रोत्साहन लेने का एक सुन्दर अवसर स्वत: प्राप्त हो जाता है कि जैसे श्रीराम हमारे जैसे मानव होते हुए शिक्षा ग्रहण करते समय तथा वनवास में सरलता से कष्ट-क्लेश, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि सहन करते रहे और प्रसन्नतापूर्वक सम्पत्ति का स्वत: त्याग किया। सारा जीवन हर रिश्ते को बड़ी खूबी से निभाया। वैसे हम भी उनकी तरह इन बातों (अर्थात् विद्याप्राप्ति के लिए तब, कारोबार में कष्ट सहन, पारस्परिक सम्पत्ति विभाजन के समय अपने स्वत्व या अंश के त्यागार्थ उद्यत रहते हुए आपस के सम्बंधों के) पालन में सदा तत्पर रहें।

हाँ, परमात्मा पूरी तरह से पूर्णकाम, सर्वसामर्थ्यवान्, असीम, नित्य, सर्वज्ञ है और उसकी तुलना में जीवन हर तरह अपूर्ण, अल्पज्ञान, शक्तिवाला, ससीम है और शरीर से संयुक्त हो जाने पर अनित्य भी है। पूर्ण परमात्मा का पूरी तरह से अनुकरण सर्वथा असम्भव भी है। हाँ, प्रभु से आत्मबल, सफलता की प्राप्ति की प्रार्थना ही की जा सकती है।

महर्षि वाल्मीकि ने यत्र-यत्र-सर्वत्र श्रीराम का मानव रूप में ही चित्रण किया है। पारिवारिक विविध सम्बंधों को निभाते हुए सुख-दु:ख की स्थिति में मानसिक भावों को एक मानव के सदृश ही

प्रकट किया है। जैसे कि सीता की खोज में श्रीराम की मानसिक विह्वलता, लंकायुद्ध में लक्ष्मण के बेहोश हो जाने पर भावों का जो उद्वेग उभरा है वह पूर्णत: मानवीयता को ही प्रकट करता है। ऐसे ही श्रीराम से सम्बंधित जितने भी सम्बंधी हैं, वे सदा श्रीराम को अपने जैसा मानव ही मानकर व्यवहार करते हैं। इनमें से किसी ने भी कभी भी श्रीराम को ईश्वर, अवतार रूप में संकेतित, व्यवहृत, निर्दिष्ट, अभिहित नहीं किया। अपितु स्वयं श्रीराम अपने आपको **'आत्मानं मानुषं रामं दशरथात्मजम्'** (युद्धकाण्ड 117.11) अर्थात् मैं दशरथ का बेटा एक मनुष्य हूँ, के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

श्रीराम, जानकी सीता, माता कौशल्या अनेक अवसरों पर सन्ध्या, देवयज्ञ करते हुए रामायण में वर्णित है जिससे सिद्ध होता है कि वे सारे ईश्वर के उपासक थे। महर्षि की रामायण में श्रीराम कहीं भी इष्टदेव रूप में वर्णित नहीं हुए। मर्यादा पुरुषोत्तम वाला श्रीराम का मनुष्य रूप ऐसा है जो किसी धर्म, शास्त्र, तर्क से विपरीत सिद्ध नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति अपने पिता, पुत्र, पति, भाई आदि से अपनापन चाहता है, जिसका पूर्णरूप श्रीराम के जीवन में मिलता है। इसीलिए भारत के समीपवर्ती बाली, जावा, मलेशिया, सुमात्रा, इंडोनेशिया आदि की मुस्लिम जनता में भी रामकथा हिन्दुओं की तरह ही प्यारी है और अभिनीत होती है।

प्रस्तुति : भद्रसेन 'वेददर्शनाचार्य'

क्यों कहते है गाय को माता?

अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा एक पुस्तक 'Cow Is A Wonder Laboratatory' अर्थात् गाय एक अद्भुत प्रयोगशाला है, जारी की गई। इस पुस्तक की चर्चा का उद्देश्य उन विद्वान् लोगों को आइना दिखाने का प्रयास है जो भारतीय धर्मग्रन्थों, शास्त्रों एवं प्रचलित मान्यताओं का विरोध करते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सभी जीव-जन्तुओं तथा दुग्धधारी पशुओं में केवल गाय ही एक ऐसा पशु है जिसकी 180 फुट लंबी आंत होती है। यह गाय द्वारा खाये गये भोजन को पचाने में सहायक होती है। गाय की रीढ़ की हड्डी के भीतर सूर्यकेतु नामक नाड़ी होती है, जिस पर सूर्य की किरण के स्पर्श से स्वर्ण तत्त्व का निर्माण होता है।

गाय के एक क्विंटल दूध में एक माशा स्वर्ण पाया जाता है। गाय के दूध व घी का रंग पीला होने का यही कारण है। यह पीलापन कैरोटीन नामक तत्त्व के कारण होता है। कैरोटीन तत्त्व शरीर में कमी होने पर ही मुँह, फेफड़े तथा मूत्राशय में कैंसर होने की संभावना अधिक होती है। वैज्ञानिकों के शोध से यह भी पता लगा है कि भैंस के दूध को गर्म करने पर पौष्टिक तत्त्व खत्म हो जाते हैं जबकि गाय के दूध को गर्म करने पर ऐसा नहीं होता। वैज्ञानिकों ने गाय के सींगों का आकार पिरामिड की तरह होने के कारणों पर शोध किया तो पाया कि गाय की सींग शक्तिशाली एंटीना की तरह काम करती हैं और इनकी मदद से गाय सभी आकाशीय ऊर्जाओं को संचित कर लेती है, यही ऊर्जा हमें गोमूत्र, गो-दुग्ध और गोबर द्वारा प्राप्त होती है। इतना ही नहीं शोध से यह भी पता चलता है कि गोमूत्र में कारबोलिक एसिड होता है जो कीटाणुनाशक होता है तथा शुद्धता व स्वच्छता बढ़ाता है।

ब्र. अमित आर्य

जगत् में भूख के समान कोई वेदना नहीं है।

परीक्षणों से पता चलता है कि गोमूत्र में नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटेशियम, सोडियम तथा लैक्टॉज आदि तत्त्व पाये जाते हैं, जो मनुष्य के शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाते हैं। गाय के गोबर तथा गोमूत्र को मिलाने से प्रोपलीन ऑक्साइड गैस बनती है जो बरसात लाने में सहायक मानी जाती है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी गैस इथलीन ऑक्साइड भी पैदा होती है जो ऑप्रेशन थियेटर में काम आती है।

कैंसर रोधी गो-घृत : नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल (हरियाणा) से प्रकाशित एक आलेख में गाय के घी का वैज्ञानिक विश्लेषण बताया गया है जिसके अनुसार इस घी में वैक्सीन, ब्यूटिक एसिड, वीटा के कैरोटीन जैसे तत्त्व पाये जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्त्वों से लड़ने की क्षमता रखते हैं।

- ब्र. अमित आर्य,
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु **'गुरुकुल-दर्शन'** द्वारा **'गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ'** नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

गतांक से आगे ... विद्याव्रत से उसे भटकाकर अपनी मोह-माया में बांधना अनुचित है। उसे पढ़ने ही देना चाहिए। संभव है, यह विचार **'आऊट डेटिड'** हों, किन्तु मैं व्यक्तिगत अनुभव से उसी पद्धति को चरित्र-निर्माण एवं विद्याध्ययन के लिए आवश्यक मानता हूँ।

हमें गर्मियों में कई बार ग्राम पच्छाद (जिला नाहन, हिमाचल प्रदेश) ले जाते थे। नाहन तब एक छोटी रियासत थी और विशाल पंजाब राज्य का एक भाग थी। गुरुकुल से करीब 5 मील दूर यमुना नदी की बड़ी नहर बहती है। ताजेवाला हेडक्वार्टर से निकलकर यह बड़ी नहर किरमिच ग्राम के पास पहुंचती है, जहाँ उस बड़ी नहर से एक छोटी नहर निकलती है। हम ब्रह्मचारियों को साल में एक-दो बार वहाँ नहाने-तैरना सिखाने ले जाते थे। हम वहाँ के पलाश-वृक्षों के पत्ते तोड़कर पत्तल और द्रोण बनाकर तैयार रहते थे। तैरने के कारण भूख भी बड़ी तेज लगती थी। हम गुरुकुल से आने वाले भोजन की बहुत व्याकुल होकर प्रतीक्षा किया करते थे और जब भोजन-सामग्री से लदी बैलगाड़ियाँ दूर क्षितिज पर दृष्टिगोचर होती थी, तो सब चिल्ला-चिल्लाकर नाचने लगते थे। वह आनन्द तो अनुभव का ही विषय है, कहना कठिन ही नहीं असम्भव है।

गुरुकुल में यह प्रथा थी कि जिस दिन आकाश मेघाच्छन्न हो, शीतल पवन बहती हो, उस दिन हम आचार्य जी से छुट्टी का दिन घोषित करने की मांग करते थे और आचार्य जी किसी अध्यापक के साथ हमें भ्रमणार्थ कहीं भेज देते थे। एक दिन हम सब सड़क से सन्निहित सरोवर की ओर चले जा रहे थे। तभी पीछे से एक जीप में बैठकर कुछ अंग्रेज वहाँ आये। मोटर की आवाज से चौंककर सड़क के पास बैठे हुए मोर उड़ उड़कर दूर जाने लगे। तभी एक अंग्रेज जीप से उतरा और उसने उड़ते हुए मोर पर बंदूक चला दी। गोली खाकर मोर नीचे गिर पड़ा और वे अंग्रेज घायल मोर को मोटर में डालकर चले गये। इस छोटी-सी घटना ने हम बालकों के मन को करुणा से द्रवित कर दिया। बेचारे निरपराध मोर को इन दुष्टों ने क्यों मारा? यह सोचकर बहुत क्रोध भी आया। अंग्रेजों के अत्याचार की कहानियाँ हम बालक सुना करते थे तो रोष उत्पन्न होता था। उस दिन की घटना से वह रोष दुगना हो गया था।

एक बार एक हवाई जहाज हमारे गुरुकुल के पास वाले खेत में मिर्जापुर गांव के इलाके में गिर गया था। शायद किसी खराबी के कारण वैमानिक ने उसे खेतों में ही उतारने की कोशिश की होगी। हवाई जहाज छोटा ही था। दो-चार लोगों के लिए ही पर्याप्त था। गिरने पर जहाज टूटा तो मगर जला नहीं। खेत की मिट्टी में धंसकर रह गया। हम बालकों के लिए हवाई जहाज एक अजूबा ही था। सारे के सारे भागते हुए हवाई जहाज को देखने दौड़े। सभी दो-चार मिनट तक उस जहाज में बैठकर आनन्द लेने लगे। उड़ते जहाज में सवार होना किसे नसीब होना था, चलो जमीन पर खड़े हुए में ही बैठ लिये। हमें इतना ही संतोष हुआ था। मुझे याद है -उस दिन मेरे पैर में चोट लगी हुई थी फिर भी मैं लंगड़ाते हुए दो मील दूर तक चला गया था। बचपन होता ही ऐसा है।

एक बार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का शिविर हमारे गुरुकुल के विशाल मैदान में लगा हुआ था। तत्कालीन सर संघचालक श्री श्री गोलवलकर गुरुजी की उस शिविर में पधारे हुए थे। दिन भर स्वयं सेवकों की कवायद आदि कार्यक्रम होते रहते थे किन्तु रात को मैदान में बड़ी रोशनी वाले पेट्रोमेक्स जलते रहते थे। हमें रात को जलने वाले इन पेट्रोमैस से बहुत भय लगता था तथा चिन्ता सताती थी। बात यह थी कि उन दिनों इंग्लैण्ड और जापान के बीच युद्ध छिड़ा हुआ था। हमने सुन रखा था कि जापानी बमवर्षक रात के अंधेरे में आकर जहाँ- जहाँ रोशनी दिखाई देती है, उस पर बम गिराते हैं। इसलिए भारत के कई नगरों में रात को 'ब्लैक आउट' रखा गया था। हम गुरुकुलीय बालक भयभीत रहते थे कि कहीं इस शिविर की तेज रोशनी को देखकर जापानी बमवर्षक जहाज इधर ना चले आयें। जापानी मोर्चा तो बर्मा देश तक ही था, किन्तु हमे भूगोल का या दूरी का क्या ज्ञान होता। इसलिए जब आर.एस.एस. का वह शिविर समाप्त हो गया, हमने बहुत खुशी मनाई थी। ....

क्रमशः

अपने तेज का बखान नहीं करते हुए भी सूर्य का तेज स्वतः जगविश्रुत है।

वास्तविक जीवन की खोज

आचार्य सत्यप्रकाश जी
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गतांक से आगे...सातवां दिन आ गया। उसका खाना-पीना बन्द हो गया। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह तो मरने की प्रतीक्षा कर रहा था। सूरज डूबने के कोई घंटे भर पहले वह फकीर उसके घर आया। घर के सारे लोग रो रहे थे। वह युवक बिस्तर पर पड़ा था। उस फकीर ने जाकर उससे कहा कि मित्र आँखें खोलो! एक प्रश्न मुझे तुमसे पूछना है। इन सात दिनों में तुम्हारे मन में कोई पाप उठा? कोई बुराई उठी? कोई अपवित्रता आई?

उस युवक ने कहा-आप कैसा मजाक करते हैं मरते हुए आदमी से। मौत मेरे इतने करीब थी कि मेरे और मौत के बीच में किसी चीज को उठने के लिए जगह ही न थी। न कोई पाप उठा, न कोई बुराई उठी। बस मौत का ही ख्याल था और तो सब भूल गया। उस फकीर ने कहा- तुम उठ जाओ। तुम्हारी मृत्यु अभी नहीं आयी है, लेकिन स्मरण रखो, जो व्यक्ति यह जान लेता है कि मुझे मर जाना है, उसके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो जाता है। उसकी दृष्टि में, उसके सोचने में, उसके विचार करने में, उसके व्यवहार में अन्तर हो जाता है। जो व्यक्ति इस बात को भूले रहता है कि हमारी भी मौत होगी, उसके जीवन में पवित्रता फलित नहीं होती, उसके जीवन में धर्म नहीं आता। उसके जीवन में हम कहें कि ईश्वर का मार्ग प्रशस्त नहीं होता है।

यह मैंने आपसे इसलिए कहा कि इस जीवन को जीवन न समझें, यह तो मरने की प्रतीक्षा है। जैसे कोई पंक्ति में खड़ा हो किसी बस में बैठने के लिए। कोई आगे है, कोई पीछे है, कोई बिल्कुल पीछे है लेकिन सारे लोग पंक्ति में खड़े हैं। बस थोड़ी देर में आएगी, धीरे-धीरे लोगों को ले जाएगी। ठीक वैसे ही हम सारे लोग एक पंक्ति में खड़े हैं, मृत्यु के लिए। जो आगे हैं वे आगे चले जायेंगे फिर एक-एक आदमी को मृत्यु पंक्ति में से लेती चली जाएगी। मृत्यु सात दिन बाद आए या सत्तर वर्ष बाद, वह आएगी जरूर। इसी बात की ओर संकेत करते हुए किसी विद्वान् ने कहा

'गृहीत इव केशेषु मुत्युना धर्ममाचरेत्।'

अर्थात् मृत्यु ने केश पकड़ रखा है ऐसा समझकर धर्म का आचरण करना चाहिए। तो क्या हम कोई रास्ता खोज सकते हैं कि मृत्यु से बच जाएं? क्या कोई मार्ग हो सकता है कि हम मृत्यु के भय से मुक्त हो जायें? धर्म इसी बात की खोज है। धर्म से हमारा तात्पर्य हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, आदि से नहीं है। धर्म का सम्बंध इस बात से है कि हम मरणधर्मा शरीर के साथ-साथ उसे भी जानें जो अमरणधर्मा, अजर, अमर, अविनाशी है।

जो व्यक्ति अपने मकान के सामने की भूमि में बगीचा लगाना चाहता हो, फूल पैदा करना चाहता हो तो वह उस जमीन को खराब पड़ा रहने नहीं देता। वह उनमें से ईट, पत्थर चुनकर अलग कर देता है, व्यर्थ के पौधों के बीज पड़े हों तो उनको अलग कर देता है। मिट्टी बदलता है, खाद डालता है, भूमि तैयार करता है ताकि बीज बोये जा सकें, फूल खिल सकें लेकिन जिस आदमी को घर के सामने कोई बगीचा नहीं लगाना है और फूल नहीं खिलाने हैं तो वह न तो ईट, पत्थरों को अलग करता है न घास-पात उखाड़ता है और न जमीन को साफ करता है। उसके घर के सामने की भूमि गंदी होती रहती है, उसमें कुछ भी उगता रहता है। जो अपने भीतर परमात्मा को खोजना चाहता है वह अपने पूरे जीवन की भूमि को साफ करने लगता है, जमीन तैयार करने लगता है ताकि उसमें परमात्मा के बीज बोये जा सकें।

जीवन में जो भी महत्त्वपूर्ण है, पाने योग्य है उसे निर्मित करना होता है और जो भी व्यर्थ है वह बिना निर्मित किये आ जाता है। ऊपर चढ़ना हो तो श्रम करना होता है और नीचे उतरना हो तो कोई भी श्रम नहीं करना पड़ता। तो जीवन में जितना ऊपर जाना हो तो उतना ही जीवन के साथ श्रम करना जरूरी है लेकिन यह श्रम तभी होगा जब हममे यह आकांक्षा, यह प्यास, यह अभीप्सा पैदा हो जाए कि हमें जीवन में कुछ होना है, कुछ पाना है, कुछ खोजना है।

आपके भीतर एक ऐसी ज्वाला जलनी चाहिए कि जब तक मैं अमृत को, परमात्मा को, सत्य को नहीं पा लूँ तब तक मैं खाली बैठने को राजी नहीं हूँ। तब तक मेरा श्रम जारी रहेगा। मेरा संकल्प जारी रहेगा। मेरी खोज जारी रहेगी। ऐसी अथक खोज के परिणाम में ही व्यक्ति आनन्द को पाता है। जो सुपृ, बिना कुछ किये केवल जीते चले जाते हैं, उठ आते हैं, सो जाते हैं और खा लेते हैं उनके जीवन में कोई बहुत बड़ी बातें घटित नहीं होती, उनके जीवन में कोई बहुत सौंदर्य उपलब्ध नहीं होता, उनके जीवन में कोई संगीत नहीं निकलता है। वे खुद भी दु:ख में जीते हैं और दूसरों को भी दु:ख में घसीटते हैं। उनके भीतर का दीया बुझा होता है, उनके खुद के भीतर भी अंधकार होता है और उनके जीवन से दूसरों तक भी अंधकार पहुँचता है। **(क्रमश:)**

जो व्यक्ति निरन्तर शोक करते रहते हैं, उन्हें कभी सुख नहीं मिलता।

एजुकेशन वर्ल्ड रैंकिंग में गुरुकुल कुरुक्षेत्र न. वन

कुरुक्षेत्र, 1 अक्तूबर 2017 : देशभर के स्कूलों में शिक्षा व विद्यार्थियों को उपलब्ध सुविधाओं पर सर्वे करने वाली संस्था एजुकेशन वर्ल्ड द्वारा देशभर के विद्यालयों का सर्वे करने के बाद गुरुकुल कुरुक्षेत्र को हरियाणा का नं. वन आवासीय विद्यालय घोषित किया है, वहीं पूरे भारतवर्ष में गुरुकुल कुरुक्षेत्र को 25वाँ स्थान मिला है। गुरुग्राम में हुए एक समारोह में गुरुकुल के निदेशक एवं प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने यह अवार्ड प्राप्त किया। एजुकेशन वर्ल्ड द्वारा दिये गये अवार्ड को गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व माइक्रोटैक कंपनी के डायरेक्टर सुबोध गुप्ता व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह की उपस्थिति में प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि भविष्य में गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा का ही नहीं बल्कि भारत का नं. वन स्कूल बनेगा।

प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित 105 वर्ष पुरानी संस्था है जो आधुनिक व प्राचीन शिक्षा पद्धति का अनूठा संगम है।गुरुकुल के कई छात्रों का चयन आईआईटी व एनडीए में हुआ है जो अपने आप में गर्व की बात

है। सुविधाओं की बात करें तो गुरुकुल में स्मार्ट क्लास, वातानुकूलित कम्प्यूटर लैब, लैंग्वेज लैब, भौतिकी, रसायन एवं जीव विज्ञान प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त एनडीए, आईआईटी, पीआईएम, एआईपीएमटी आदि प्रतियोगी परीक्षाओं पूरी तैयारी करवाई जाती है। विद्यार्थियों के खेलने के लिए विशाल मैदान और आवास हेतु भूकम्परोधी अलग-अलग 4 छात्रावास है जो सभी सुविधाओं से युक्त हैं और सभी छात्रों को जहर व रसायन मुक्त 'शून्य लागत प्राकृतिक कृषि' से उत्पन्न अन्न से तैयार भोजन दिया जाता है।

नृत्यांगना सोनल मानसिंह गुरुकुल देखने पहुंची

कुरुक्षेत्र, 3 अक्तूबर 2017 : विश्व प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय संगीत नृत्यांगना सोनल मानसिंह गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुंची और गुरुकुल की गोशाला, एनडीए विंग, भोजनालय, प्राकृतिक चिकित्सालय सहित सभी प्रकल्पों का दौरा कर जानकारी प्राप्त की। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने बताया कि भरतनाट्यम् और ओडिसी जैसे भारतीय नृत्यों में पारंगत सोनल मानसिंह के गुरुकुल प्रांगण में पहुंचने पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य लेखा अधिकारी सतपाल सिंह भी उपस्थित रहे।

गुरुकुल का दौरा करने के बाद सोनल मानसिंह ने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के बारे में उन्होंने जो सुना था, यहाँ आकर उससे भी अधिक भव्य और सुन्दर पाया। गुरुकुल की गोशाला व अन्य व्यवस्थाएं वाकई लाजवाब है। उन्होंने बताया कि वे महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के कहने पर गुरुकुल देखने आयीं। उन्होंने कहा कि एनडीए, शूटिंग रेंज, घुड़सवारी जैसी सुविधाओं से सुसज्जित इस गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्र निश्चित तौर पर देश को तरक्की की नई ऊचांइयों पर लेकर जाएंगे। उन्होंने गुरुकुल में एक

जैविक कृषि में गुरुकुल कुरुक्षेत्र रहा प्रथम

कुरुक्षेत्र, 21 सितम्बर 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के जीरो बजट प्राकृतिक कृषि मॉडल को कुरुक्षेत्र जिले में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। गुरुकुल को यह पुरस्कार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में 19 से 20 सितम्बर तक चले कृषि मेले में दिया गया। गुरुकुल के कृषि अधिकारी गुरदीप सिंह ने बताया कि हिसार में आयोजित कृषि मेले में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आचार्य देवव्रत द्वारा 'प्रथम प्रगतिशील किसान' पुरस्कार भेंट किया गया। उन्होंने बताया कि कृषि मेले में हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों से आए सैकड़ों किसानों ने खेती की विभिन्न तकनीक के बारे में अपने अनुभव और विचार व्यक्त किये।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के जीरो बजट प्राकृतिक कृषि मॉडल से सभी कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी तथा किसान बड़े प्रभावित हुए और कई किसानों ने इस मॉडल को अपनाने का संकल्प लिया। जिला में प्रथम पुरस्कार आने पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरूण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, सतपाल सिंह, धर्मसिंह, अनिल कुमार, प्रवीण कुमार, अशोक कुमार, कंवरपाल, दिलबाग सिंह, महक सिंह, अमरनाथ आदि ने कृषि अधिकारी गुरदीप सिंह व उनके सभी कर्मचारियों को बधाई व शुभकामनाएं दी।

पड़ोसी के साथ भलाई करना एक प्रशंसनीय गुण है।

गुरुकुल बनेगा जैविक कृषि का अग्रदूत : आचार्य देवव्रत

कृषिमंत्री ने गुरुकुल के 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण केन्द्र' का शिलान्यास, 'विजयन्त टैंक' का अनावरण व 'वार्षिक स्मारिका' का किया विमोचन

कुरुक्षेत्र : हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल व गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत ने कहा कि राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका गुरुकुल कुरुक्षेत्र शिक्षा व क्रीड़ा के क्षेत्र में हासिल उपलब्धियों के साथ-साथ अब किसानों को उत्कृष्ट अन्न उत्पादन का सन्देश देकर जैविक कृषि का अग्रदूत भी बनेगा। गुरुकुल कुरुक्षेत्र जैव उर्वरकों के नवीन प्रयोगों के द्वारा कृषि क्षेत्र में जहरमुक्त खेती का सन्देश देकर नव-आयाम स्थापित कर रहा है। जैविक कृषि पर अनुसंधान कार्य भी जोर-शोर से जारी हैं। वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के **105वें वार्षिक महोत्सव** के दूसरे दिन आयोजित जीरो बजट प्राकृतिक कृषि एवं गो-रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए संबोधित कर रहे थे, जबकि समारोह में कृषि मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

आचार्य देवव्रत ने कहा कि गुरुकुल जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रशिक्षित भी कर रहा है, जिसके सकारात्मक परिणाम किसानों के सामने हैं। उन्होंने बताया कि गुरुकुल 200 एकड़ भूमि पर जैविक कृषि से उत्कृष्ट अन्न उत्पादन कर रहा है। जैविक कृषि योजना से किसान न केवल ऋण के बोझ से मुक्त रहेंगे बल्कि आर्थिक रूप से भी समृद्ध होंगे।

महामहिम ने बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा की जा रही जैविक कृषि के सकारात्मक परिणामों को देखने के लिए सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल गुरुकुल भेजा। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने जब जैविक कृषि द्वारा उत्पादित अन्न की गुणवत्ता को देखा तो वे आश्चर्यचकित हो गये। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने इस संदर्भ में प्रधानमंत्री को जब बताया तो उन्होंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण केन्द्र' खोलने का फैसला किया जिसे महामहिम ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। गुरुकुल कुरुक्षेत्र में किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र शीघ्र खोला जाएगा ताकि किसान आत्महत्या से दूर रहकर आर्थिक रूप से सम्पन्न हो सकें।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हरियाणा के कृषि, सिंचाई, पशुपालन व डेयरी मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने कहा कि जैविक कृषि से फसल उत्पादन की लागत में कमी आती है तथा नाइट्रोजन व घुलनशील फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ती है। जैविक खाद से पौधों में वृद्धिकारक हारमोन्स उत्पन्न होते हैं जिससे पौधों में कीड़े इत्यादि नहीं लगते तथा फसल में मृदाजन्य रोग भी दूर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का दो दिवसीय 105वाँ वार्षिक महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

रहते हैं, इसलिए किसानों को फसल में कीटनाशकों को छिडकने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। जैविक खाद में लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या में भी बढोतरी होती है, इसलिए जैविक खाद किसानों के लिए अत्यन्त लाभकारी है क्योंकि जैविक खाद में मौजूद लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन को फसल के लिए उपलब्ध कराते हैं। इससे मिट्टी में मौजूद अघुलनशील फास्फोरस को पानी में घुलनशील बनाकर पौधों को देते हैं।

कृषिमंत्री ने कहा कि अनेक वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है कि जैविक खाद के प्रयोग से 30 से 40 किग्रा0 नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर भूमि को प्राप्त होती है तथा उत्पादन भी 10 से 20 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। जैविक कृषि हरित क्रान्ति में एक मील का पत्थर साबित होगी क्योंकि इससे किसान न केवल स्वस्थ रहेगा बल्कि आर्थिक रूप से भी सशक्त होगा इसलिए किसानों को रासायनिक उर्वरकों को त्यागकर जीरो बजट प्राकृतिक कृषि को अपनाना चाहिए ताकि भूमि में पोषक तत्त्वों की मात्रा बनी रहे।

कृषिमंत्री ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र परिसर में 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र' का शिलान्यास तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में स्थित '**विजयन्त टैंक**' (माक-1) का अनावरण तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा प्रकाशित '**वार्षिक-स्मारिका**' का विमोचन हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत की गरिमामयी उपस्थिति में किया। गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरूण दत्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित ओमप्रकाश धनखड़, लाडवा के विधायक डॉ. पवन सैनी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा0 रामपाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री उमेद सिंह व प्रस्तोता सर्वमित्र आर्य, डॉ. हरिओ३म को गुरुकुल की ओर से स्मृति-चिह्न व उपहार प्रदान कर सम्मानित भी किया। कृषि मंत्री ने अपने ऐच्छिक कोष से गुरुकुल को 11 लाख रूपये का अनुदान देने की भी घोषणा की।

इसी दिन प्रात:कालीन श्रृंखला में कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओ३म व आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मा0 रामपाल आर्य ने

संयुक्त रूप से कहा कि कृषि वैज्ञानिकों ने मृदा व वातावरणीय प्रदूषण रहित जैव उर्वरकों को खोज निकाला है जो पौधों को पोषक तत्त्व उपलब्ध करवाने के साथ-साथ भूमि की भौतिक, रासायनिक व जैव क्रियाओं में भी सुधार करते हैं। इस प्रकार जैविक खाद एक सस्ती एवं प्रभावशाली खाद है अत: इसके प्रयोग को बढ़ावा देना देश व किसान दोनों के हित में है। जैविक खाद से भूमि की उर्वरा शक्ति में सुधार आता है। परम्परागत खेती के साथ-साथ अगर आधुनिक ढंग से किसान खेती करें तो उन्हें दोहरा लाभ प्राप्त हो सकता है। इसका ज्वलंत उदाहरण गुरुकुल कुरुक्षेत्र में देखने को मिलता है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र जैविक कृषि का प्रशिक्षण प्रदान कर किसानों को न केवल पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दे रहा है बल्कि किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त भी बना रहा है। अनेक किसानों का अधिक खर्च व फसलों में आने वाली बीमारियों के कारण खेती से मोह भंग होता जा रहा है इसका एकमात्र उपाय जैविक कृषि है क्योंकि इससे किसान शून्य बजट पर कृषि कर आर्थिक बोझ व रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभाव से मुक्ति पा सकता है। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक किसानों ने जैविक कृषि को अपनाया है तो इसके आश्चर्यजनक परिणामों को देखकर वे अचंभित व गदगद हो गये। किसानों का कहना है कि जैविक कृषि में ही पर्यावरण बचाव का अहम सन्देश छुपा हुआ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रस्तोता सर्वमित्र आर्य ने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि गाय पशु मात्र नहीं बल्कि देश की माता है। जिस गोमाता का दूध, दही व घी खाकर हम इतने बड़े हुए हैं उस गोमाता की सेवा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। उन्होंने गाय को राष्ट्र की धरोहर बताते हुए कहा कि गो-हत्या धरती पर एक कलंक है जिस पर हमें अंकुश लगाना होगा। गाय अपने जीवन से लेकर मृत्यु तक हमारे काम आती है इसलिए हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि हम गाय की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहें। देश में गोमाता को राष्ट्र-माता का दर्जा मिलने से ही देश पूर्णरूप से खुशहाल, सम्पन्न व उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा। उन्होंने गाय की दुर्दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि युवाओं को गो-सेवा का बीड़ा उठाना चाहिए तभी हमारी सभ्यता व संस्कृति बच पाएगी।

पहले दिन कुरुक्षेत्र के पुलिस अधीक्षक अभिषेक गर्ग ने गुरुकुल के 2 दिवसीय वार्षिक महोत्सव का शुभारम्भ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ '**ओ३म पताका**' को फहराकर किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा नैतिक व मानवीय मूल्यों की पहचान है, इसके बिना शिक्षा अधूरी है। शिक्षक शिक्षा के साथ-साथ छात्रों को संस्कार भी दें ताकि राष्ट्र को सभ्य नागरिक मिल सकें। उन्होंने उन्होंने कहा कि एक सभ्य समाज के लिए शिक्षित व स्वस्थ नागरिक का होना जरूरी है, क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति के मस्तिष्क में ही स्वस्थ दिमाग का वास होता है। परिवार विद्यार्थी की पहली पाठशाला है इसलिए परिवार के लोगों को अपने आचरण व व्यवहार को उदात्त बनाना चाहिए ताकि उनके बच्चे उनसे अच्छी शिक्षा व संस्कार ग्रहण कर सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए इससे न केवल वे मानसिक रूप से बल्कि शारीरिक रूप से भी सबल होंगे। उन्होंने गुरुकुल की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि एक ही परिसर में गुरुकुल अनेक प्रकल्प संचालित कर रहा है, जो एक मिसाल है। गुरुकुल जैविक कृषि के माध्यम से पूरे प्रदेश व देश के किसानों को एक दिशा प्रदान कर रहा है, जो अन्न उत्कृष्टता के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगा।

गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने मुख्य अतिथि अभिषेक गर्ग, सुधीर कुमार, नरेन्द्र कुमार व योगेन्द्र मलिक को गुरुकुल की ओर से स्मृति-चिह्न व उपहार प्रदान कर सम्मानित किया। गुरुकुल के निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरूण दत्ता ने मुख्य अतिथि के समक्ष गुरुकुल की समस्त गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरुकुल के छात्र शिक्षा व क्रीड़ा के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी गुरुकुल का नाम रोशन कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि गुरुकुल के अनेक छात्र एनडीए, एमबीबीएस, आईआईटी इत्यादि में अपनी योग्यता पर चुने गये हैं। समारोह को मुख्यमंत्री के सलाहकार योगेन्द्र मलिक, सेवा भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री सुधीर कुमार ने भी सम्बोधित किया।

गुरुकुल के छात्रों ने मनोहारी योगासन, जिम्नास्टिक, रस्सी मल्लखम्भ पर हैरतअंगेज कारनामें दिखाकर सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। गुरुकुल के निशानेबाजों ने 'अभिनन्दन पट्टिका' का लक्ष्य-भेदन कर मुख्य अतिथि का अनुपम ढंग स्वागत किया जिसे देखकर वे गदगद हो गये। वहीं योगेन्द्र मलिक, सुधीर कुमार व सुधीर कुमार द्वारा गुरुकुल के छात्रों द्वारा लगाई विज्ञान-प्रदर्शनी का उद्‌घाटन व अवलोकन भी किया। समारोह में हिमाचल प्रदेश की लेडी गर्वनर श्रीमती दर्शना देवी, राज्यपाल के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अधिष्ठाता रमेश आर्य, गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, गुरुकुल के निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, लाडवा के विधायक डॉ. पवन सैनी, आर्य सी. सै. स्कूल घरौण्डा के निदेशक जगदीश आर्य, प्रेस प्रवक्ता डॉ. श्यामलाल शर्मा, मुख्य लेखाकार सतपाल सिंह, नन्दकिशोर आर्य गुरुकुल के समस्त अध्यापकगण व अभिभावकवृन्द भी उपस्थित रहे।आचार्यगण व विद्यार्थियों के अभिभावकवृन्द उपस्थित थे।

परोपकारी का मार्ग न समुद्र रोक सकता है और न ही पर्वत।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो ISO 9001: 2008 प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी): इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण): इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त **जैविक खाद एवं कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं '**गुरुकुल-दर्शन**' मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

जिसका मन पवित्र नहीं उसका कोई कर्म पवित्र नहीं होता।

'गुरुकुल के 105वें वार्षिक महोत्सव की चित्रावली'

वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु ने किया अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ

गुरुग्राम : सर्व कल्याण धर्मार्थ न्यास पानीपत के तत्त्वाधान में आयोजित वर्षपर्यन्त **अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र** का शुभारम्भ 1 अक्तूबर 2017 को हरियाणा के **वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु जी** द्वारा आर्य समाज बसई (गुरुग्राम) में किया गया। सभाध्यक्ष पूज्यपाद आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी (आर्यवन रोजड़) रहे, उन्होंने अपने सम्बोधन में यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। समारोह में यज्ञ ब्रह्मा भरतलाल शास्त्री, मुख्य यजमान शिवलाल चौधरी रहे। **महात्मा वेदपाल जी**, सुरेन्द्र सिंह तोमर एवं दलजीत सिंह के अथक प्रयासों से आरम्भ हुआ यह अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र **30 सितम्बर 2018** तक चलेगा।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे **कै. अभिमन्यु** ने कहा कि वेदों में ज्ञान का भण्डार है। एक-एक मंत्र में क्या -क्या रहस्य हो सकता है, इस पर अनुसंधान करने की आवश्यकता है। वेदों के कारण ही भारत फिर से विश्वगुरु बन सकता है। यज्ञ में मंत्रोच्चारण के साथ आहूति डालते हुए उन्होंने कहा कि यज्ञ से बढ़कर कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है। यज्ञ मार्ग पर चलकर जीवन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की जा सकती है।

वित्तमंत्री ने कहा कि अभी तक भारत ने विश्व को योग एवं आयुर्वेद का जरा-सा अंश ही दिखाया है, इसके अध्याय तो अभी शेष हैं। योग दुनिया में चरम पर है और हमें इसे उत्कर्ष तक पहुँचाना है। योग और आयुर्वेद के दम पर ही **योगगुरु स्वामी रामदेव** ने विश्व में न केवल अलग पहचान बनाई बल्कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को ... स्वदेशी बाजार खड़ा कर दिखाया।

पटौदी हरि मंदिर आश्रम के महामंडले... ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण प्रदूषण से चिंतित है। पर्यावरण प्रदूषण का शुद्धिकरण केवल हवन-यज्ञ से स... भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे। अन्त में न्यास प्रमुख **महात्मा वेदपाल जी** ने समारोह में आए सभी अतिथियों ... या।

RNI ...
Postel ...
स्वामी- गुरु ...
एवं मुद्रक ...
प्रिंटिंग ...
कालेज, कु...
कुरुक्षेत्र, (...
कुरुक्षेत्र से ...
मूल्य-15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)